SHREE SWAMINARAYAN

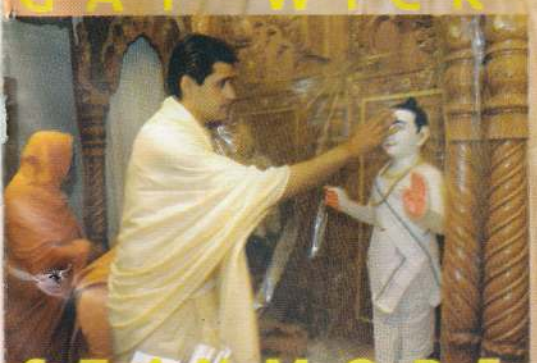
श्री स्वामिनारायण

Rs. 5/-

September '06



GAT WICK

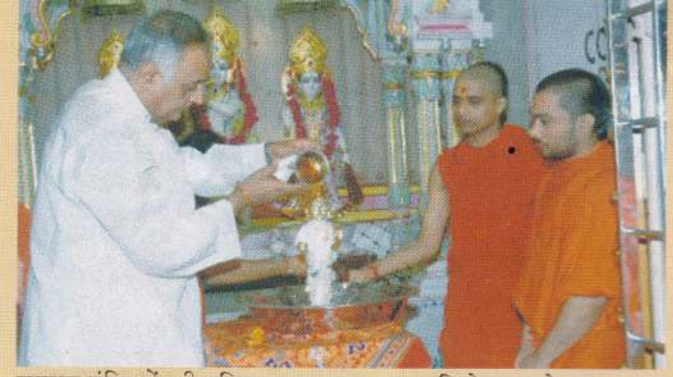


STANMORE

मूर्ति प्रतिष्ठा

BOSTON

પ્રકાશક:- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



जयपुर मंदिर में श्री हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक करते हुए प.पू. बडे महाराजश्री के साथ महंत स्वामी ।



गेटविक में अपने मंदिर में यज्ञ विधि करते हुए प.पू. महाराजश्री ।



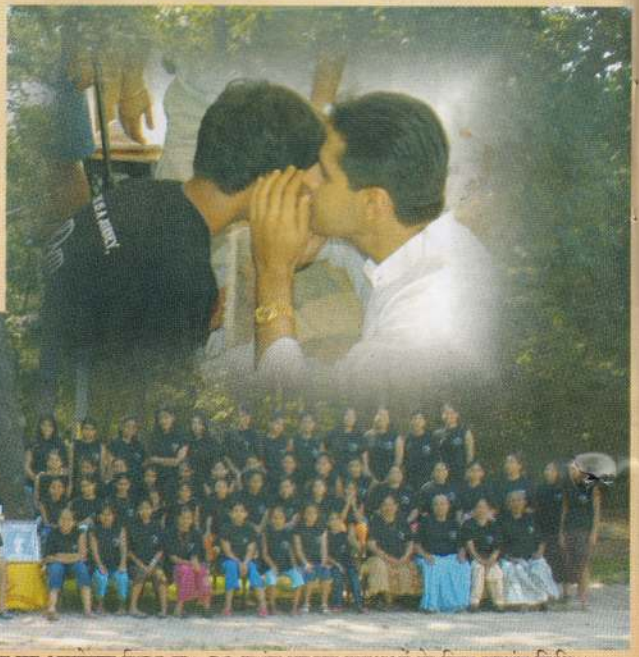
जयपुर मंदिर में पाटोत्सव के यजमान प.भ. मनुभाई और गोविंद स्वामी आदि को आशीर्वाद देते हुए प.पू. बडे महाराजश्री ।



कोलोनीया में अपने मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया उसकी तसवीर ।



विल्सडनलेन में युवा केम्प में दर्शन देते हुए प.पू. महाराजश्री ।



यूजर्सी प.पू. महाराजश्री की अध्यक्षता में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल आयोजित युवा केम्प का आयोजन किया गया इस प्रसंग पर नए मुमक्षुओं के लिए गुरुमंत्र विधि ।



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमे परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

શ્રી નરનારાયણદેવ પીઠસ્થાન મુખપત્ર

SHREE SWAMINARAYAN

श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ५ सितम्बर - २००६

अ नु क्र म णि का

१. अस्मदीयम २
२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा ३
३. ईश्वर श्रद्धा का विषय ४
४. कर्मयोग एक विहंगावलोकन ५
५. जनमंगल स्तोत्र का हिन्दी संस्करण ६
६. श्रीहरि के अवतार का प्रयोजन ८
७. माँ ९
८. साची स्वतंत्रता १०
९. सत्संग सुरभि : अवसर अजब बना है आज १२
१०. सत्संग बालवाटिका १३
(१) मफत का सोना मौत का कारण
(२) तप करने से विद्या मिलती है ?
(३) दृढ आशरा का बल
११. प्रश्नपेटी १६
१२. भक्तिसुधा १७
(१) भगवानमे दृढ विश्वास
(२) भगवान को केसा जानना
(३) हरवाई- वालवाई (४) माला का महत्व
१३. समाचार वृत्तांत २१

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९१२.
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : sntemple@hotmail.com
www.swaminarayanmuseum.com / org

अस्मदीयम् तन्त्रीश्री की तरफ से.....

वर्षाऋतु के आगमन की जितनी आतुरता से प्रतीक्षा की जा रही थी उतने ही वेग से वर्षारानी समग्र गुजरात में छा गई । उस कारण कितने लोगों को सुख तो कुछ लोगो को पीडा सहन करनी पडी । सर्वत्र जलप्लावन प्रवर्तीत हो गया । इसीलिए प्रभु से प्रार्थना होने लगी की अब तो शांत हो जाईए । देखिये तो इस जीव को कितना विचित्र स्वभाव है । परमात्मा देते हैं तो भी दु:ख नहीं देते तो भी दु:ख ऐसी अनुभूति करते हैं । बहुत अधिक संपत्ति हो तो भी दु:खी होतें है । क्योंकि संपत्ति आती है तो परिवार आता है, सगे संबंधी, पुत्र-कलत्र माल-मिल्कत और पद प्राप्त होता हैं । इसीलिए उसमें निकलने का नाम ही नहीं लेता । वासना आसोक्त और मेरा के बंधन से मुक्त ही नही हो पाता है । परिणाम स्वस्म गमनागमन के मृत्यु स्मी संसार में बार-बार पड़ता रहता है । इससे दूर होने के लिए शास्त्र एवं संत बहुत प्रयास करते हैं, जिससे इस जीव को लक्षचौरासी का बन्धन खत्म हो जाय । फिर भी जीव को इस का ज्ञान नहीं होपाता और वह अधिक बंधन मे फंसता ही जाता है । जीवन पर्यन्त दु:ख भोगता रहता है । दुर्लभ ऐसे मनुष्य देह को व्यर्थ में खोदेता है । इससे बचने के लिए, दु:ख से निवृत्ति के लिए, सांसारिक पदार्थो के पंच विषयो से अंत:करण की वृत्ति को हटाकर आत्मस्वस्म की दृढता के साथ परमेश्वर के स्वस्म में एकांतिक भक्तिको लगादेना चाहिए, यही बुद्धिमान मनुष्य का लक्षण है, मनुष्य मात्र का कर्तव्य है । उसी परमात्मा में जीवात्मा का नित्य सम्बन्ध होना ही मोक्ष है, जिसके लिए सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- *शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का*

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

अगस्त -२००६

२९ जुलाई से २२ अगस्त

लन्दन (यु.के.) के गेटविक I.S.S.O. के नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण । वहाँ के अपने अन्य मंदिरोमें दर्शनार्थ पधारे, तथा वहाँ से अमेरिका में कोलोनिया I.S.S.O. श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रथम पाटोत्सव अपने वरद् हाथो से धूम-धाम के साथ सम्पन्न किये ।

१४ से २१ अगस्त

बोस्टन लोवेल I.S.S.O. पुनः नवनिर्मित शिखरी मंदिर में अपने ही सांनिध्य में कथा पारायण, यज्ञ, महापूजा कलश स्थापन तथा ता. २०-८-०६ के दिन मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा अपने वरद् हाथों से वेदविधि पूर्वक सम्पन्न किये ।

ता. २२-२-०६ को स्वदेश आगमन

२३. कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में शिवपूजन, रुद्राभिषेक प्रसंग पर पदार्पण ।

२७. अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री गणपतिजी का स्थापन-पूजन-आरती अपने वरद् हाथों से सम्पन्न किये ।

२८. लांबेश्वर की पोल में श्री गणपतिजी के पूजन-अर्चन-आरती प्रसंग पर पदार्पण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का प्राकट्योत्सव

समस्त सत्संग को सहर्ष आनंदपूर्वक बताया जा रहा है कि श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का प्राकट्योत्सव आश्विन शुक्ल-१० विजया दशमी ता. २-१०-२००६ सोमवार को अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में धूमधाम से संपन्न होगा । सभी संतो और हरिभक्तों को लाभ प्राप्त करने के लिए दिव्य आमंत्रण भेंजा जा रहा है ।

ईश्वर श्रद्धा का विषय

- पार्षद हितेष भगत गुरु जगतप्रकाशदासजी (धोळका)

शास्त्र में लिखा है :

इन्द्रियाणि पराण्याहुः इन्द्रियेभ्यः परं मनः ।
मनस्तु परा बुध्धिः यो बुद्धेः परतस्तु सः ॥

शरीर से इन्द्रिया महान है इन्द्रिया से मन महान है मन से बुद्धि महान है और इसे सबसे दिव्य स्वरूप सहजानंद बडे है श्रीजी महाराज स्वंम कहते है कि अगर मैं स्वयं अपना माहात्म कहने के लिये बैठु तो में भी नही कह सकता हूँ स्वामी विवेकानंद कहते थे "जहा वैज्ञानिक की सरहद खत्म होती है वही से आध्यात्म कि सरहद शुरु होती है" इनके कहने का अर्थ यह है की अगर कोई व्यक्ति सोचे कि में बुध्धि से भगवान प्राप्त करुंगा तो वह अशक्य है क्योंकि बुद्धिशाली व्यक्ति के पास तर्क वितर्क, परंतु काझडा होता है । और भगवान एक श्रध्धा का विषय है, पर में यह नही कहता हूँ कि आप अंधश्रध्धा रखे कयोकि सत्संग मे आने के बाद हमे सुक्ष्म शरीर से अंधश्रध्धा को निश्क्रिय करना होता है क्यो कि किसी भी काम प्रारंभ करने से पूर्व उस पर विचार करना आवश्यक है । पर विचार ही नही करते रहने चाहिये और वैसे भी हम सबकी एक बडी समस्या है वह यह है कि हमे अगर कोई व्यक्ति समझाता है तो हम उस व्यक्ति की बात पर यकीन कर लेते है हमे जब कोई दूसरा व्यक्ति आकर कहता है कि आपने यह गलत किया और तब भी यकीन कर लेते है । यानि कि विश्वास नही होता कि हम सही जगह पर है या नही हमें भवसागर के कठीन मार्ग को आनंददायक बनाने के लिये विश्वास की जरुरत है और विश्वास की दवाई आती नही है उसको खालिया कि तुरंत विश्वास ही विश्वास आ जाये हमारे अंदर भगवान के प्रति एंव आचार्य महाराज के प्रति विश्वास लाने के लिये मन बुद्धि, इन्द्रिया कि जरुरत पडेगी वैसे तो ये इन्द्रिया हमारी शत्रु है क्योकि शास्त्र में लिखा है ।

शत्रवः सन्ति निजेन्द्रियाणि ।
तनि एंव मित्रांणि जितानी यानि ॥

जो इन्द्रिया आप कि शत्रु है वह इन्द्रिया अगर आपके काबू में रहेगी तो वह श्रेष्ठतम मित्र है । क्योंकि भगवान को प्राप्त करने के लिये मानवदेह कि आवश्यकता है और शरीर को इन्द्रियों को काबु में रखना पडेगा जितेन्द्रिय बनाना पडेगा जितेन्द्रिय बनने के बाद सत मनोवृति भगवान के चरणकमल में रखकर श्रध्धा एंव प्रेम से भक्ति करनी होगी हमें शंका कुशंका तब होती है जब हमे कोई संत कथाओ वे अतर्गत कोइ आश्चर्य भरी लीला चरित्र सुनाते है तब हमे गले से नीचे उतरता और हम सोच लेते है । कि यह जुठ बोल रहे है पर वास्तव में ऐसा नही होता आप सोचिये कि भगवान कितने बच्चे है ? हम कल्पना भी नही कर शकते मगर तो भी सर्वोपरी स्वामिनारायण भगवान ने छपियामें जन्म लिया और सब मनुष्य के जैसे हम खाते पीते उठते बैठते हैं ठीक उसी तरह भगवान भी करते है क्योकि हम सब भगवानकी भक्ति करके दिव्य धाममे जा सके इसीलिये भगवान हमारे जैसे हुए । बहुत लोगों कि ऐसी मान्यता होती है कि जीवन में गुरुकी कोई आवश्यकता नही होती मगर भगवान स्वामिनारायण भगवान इसे गलत बताते है क्योकि जिसने कोलकाता का रास्ता नही देखा है वह वह आपको कोलकता का रास्ता बतायेगा ? में आपको एक उदाहरण देता हूँ पूनम की रात है आप और आपके मित्र एक वृक्ष के नीचे सोये हुए है आपको चांद नही दिख रहा है आपके मित्र को दिख रहा है आपके मित्र ने कहा आपको चांद देखना है तो आपके मित्र ने कहा जो लम्बी डाल उसकेउपर से हैं वोही डाल है उस डालमे पीले पते है है उस पीले पते को छूकर चांद है पर आप गोर से सोचिये कि क्या चांद और पीला पता वास्तव में है ? नही पर आपके मित्र ने चांद देखा और आपको भी दिखाया आपके मित्र ने जो भी किया वह आपके लिये किया इसीलिये आप उनके प्रति गुणग्राहक दृष्टि रखिए और भगवान तथा आचार्य महाराजश्री एंव संतो भक्तो के प्रति श्रध्धा रखकर और नरनारायण के प्रति वफादार बनकर भक्ति करेगे तो महाराज कि मूर्ति तथा अक्षरधाम का सुख मार्ग में मिल जायेगा ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के नये वर्ष का ग्रीटींग्स प्रकाशित हो गया है

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के नए वर्ष के ग्रीटींग्स प्रकाशित हो चुके है ।

प.पू.ध.धु. बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का दिव्य अलौकिक संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युझियम का नूतन वर्ष का सुंदर आकर्षक ४ कलर में ग्रीटींग्स प्रकाशित किया गया है । (किंमत रु ५) जो अहमदाबाद कालुपुर मंदिर, नारायणघाट, कांकरिया, नारायणपुरा, जीवराजपार्क, एप्रोच बापुनगर, जेतलपुर धाम, धोलका, मूली आदि मंदिरो में मिलेंगा ।

कर्मयोग एक विहंगावलोकन

- प्रो. महादेव धोरीयाणी (राजकोट)

समस्त संसार के साहित्यमें श्रीमद भागवतगीता जैसा कोई ग्रंथ नही है । हिन्दू के धर्म एवं नीति का जिन्हे ज्ञान करना हो वे इस ग्रथं का अवश्य अध्ययन करे । गीता महाभारत केमहाभंडार का एक अमूल्य रत्न है ।

''नियत: कुम्कर्मत्वम ।''

हे अर्जुन ! शास्त्र विहित धर्मको कर कारण यहकि कर्म न करने की अपेक्षा कर्म करना श्रेष्ठ है । कर्म हमे प्राप्ति के लिये नही अपित आंतरिक विकास का अमोध साधन है । इसलिये कभी भी निष्क्रिय नही रहना चाहिये । निश्क्रीयता मुत्यु के समान है । सक्रियता जीवन की पहचान है । कर्म से शरीर, मन, बुद्धि सभी क्रियाशील रहते है । निष्काम बुद्धि से कर्म करनेवाले का चित्त शुद्ध रहता है । परमपद की प्राप्ति होती है । ''स्वे - स्वे कर्मण्यभिरत:'' स्वयं के नियामनुसार कर्म में निमग्न होकर मनुष्य सिद्धि को प्राप्त करता है । ''योग कर्मसु कौशलम्'' कर्म योगकी कुशलता है । (गीता.२/५०)निष्काम कर्मयोग में अद्भुत सामर्थ्य है । जिससे व्यक्ति का तथा समाज का कल्याण होता है । कर्मयोग साधन भी है और निष्ठा भी है। निष्ठा अर्थात अंतिम अवस्था ।

कर्मयोग से ही शारीरिक क्रिया सम्पन होती है । उसी की देन है कि बुद्धि में तेज: शक्ति का प्रसार होता है । ''कर्मणा शुद्धि:'' अर्थात कर्म से चित्त की शुद्धि होती है । चित्त शुद्ध होने से ज्ञान प्राप्त होता है । स्थितप्रज्ञ की तरह कर्मयोगी पुरुष को बताया गया है । गीता में कर्म शब्द स्वधर्म के लिये प्रयुक्त है । कर्म के साथ मन का सम्बंध अवश्य होता है । विकर्म का कर्म के साथ सम्बंध भी आवश्यक है। विकर्म को ही गीता में मन का मेला कहां है । विकर्म का अर्थ होता है विपरीत कर्म निषिद्ध कर्म । गीता में कर्म का तीन प्रकार बताया गया है सात्विक, राजसिक, तामसिक, बाहर अन्तर का विशेष कर्म ही विकर्म है । कर्म के साथ विकर्म का सम्बध जोडने से शक्ति का विस्फोट होता है ।

भगवान ने अर्जुन को समत्व बुद्धि से किये गये कर्म को करने की बात कही है । निष्काम कर्म की अपेक्षा सकाम कर्म का स्थान बहुत न्यून है । ''समत्वं योग उच्यते'' समता का भाव होना ही कर्मयोग है । अर्थात सुख - दु:ख, राग-द्वैष, इत्यादि में भी जिससे समता का भाव है उसी को कर्मयोगी कहा गया है । ''गहना कर्मणो गति'' कर्म की बडी कठिन गति है । कर्म का ही अकर्म होता है । इस ध्येय की उपलब्धि के लिये स्वधर्माचरणरुपी कर्म करना आवश्यक है । धीरे धीरे कर्म करते हुए स्वधर्माचरण के सहकार से निर्विकार होने का अवसर होता है । स्वधर्म पालन ही उस मार्ग का सच्चा धर्म है । कर्मयोग की यह अद्भूत चाभी है ।इस चाभी का सहकार लेकर सभी कर्म निस्पद्रव हो जाते है। जो मनुष्य कर्ममें अकर्म को तथा अकर्म में कर्मका अनुभव करता है, वही बुद्धिमान है । अभिमान एवं आस्तिक का त्याग करके कर्म - अकर्म करना चाहिए ।

कर्म की दक्षता ही योग है । सर्व समभाव का होना भी योग है । प्रत्येक शुभ कर्म यज्ञ है । गीता कर्मयोग की प्रधानता का समर्थन करती है । कर्मयोगी जाग्रत होकर अन्तर को लगातार जाग्रत रखता है । कर्म करते रहना ही बुद्धियोग है यही कर्म योग है। यहाँ पर आत्मनिष्ठा के सुदृढपाये पर कर्मयोग का उपदेश किया गया है।

कर्म करते समय यह कर्म मै करता हूँ । इसका भावभी मुझे मिले इस प्रकार की अहंबुध्धि नही आने देना चाहिए । ''कर्मव्येवाधिकारस्ते माफलेषु कदाचन'' ।

तुम्हारा कर्ममे ही अधिकार है । इसलिये स्पृहता छोडकर अनासिक्त होकर परमात्मा को प्राप्त करने में लगा दे । जनक विदेही जैसे समर्थ ज्ञानी भी कर्म द्वारा ही परम लक्ष्य को प्राप्त कर सके है । क्रिया के बिना कर्म होना सम्भव नही है । प्रत्येक कर्म किसी न किसी प्रकार की क्रिया है ।

कर्म मे दो विभाग हैं - अनासक्तीय तथा आचरणरुप । लोकसंग्रह अर्थात सामान्य व्यकित की उन्नति अथवा कल्याण के लिये लोकसंग्रह के अनुसार भी कर्म करना चाहिएं ।

जिस कर्मको करने से ज्ञान का उदय हो वही धर्म है । कर्म- ईश्वर की प्रसन्नता के लिये अथवा संम्पूर्ण विश्व की शांति के लिये करो । प्रवृति के विना मनुष्य नहीं रह सकता । प्रवृति ही

अनुसंधान पृष्ठ नंबर ११

जनमंगल स्तोत्र का हिन्दी संस्करण

- चंन्द्रकांत मोहनलाल पाठक (गांधीनगर)

किसी समय भगवान स्वामिनारायण हृदय में स्मरण करते हुए महर्षि शतानन्द स्वामी उन्मत्त गंगा के किनारे बैठे हुए थे। उस समय भगवान की इच्छा से उन्हें इच्छा हुई की महाप्रभु भगवान प्रसन्न होकर हमें आज्ञा कर रहे है कि आप सत्संगियों के जीवन का नौका सम आदर्श ग्रन्थ सत्संगिजीवन की रचना करें। इस ग्रंथ की प्रामाणिकता स्वयं महाप्रभु ने की है। इस में सभी जीव मात्र के कल्याण की बात कही गयी है। इस बृहद् शास्त्र का सम्पूर्ण पठन एवं श्रवण कठिन है। इस कलिकाल में समय का अभाव सभी को अपरिहार्य है। इसलिये इस शास्त्र का आश्रय लेकर श्रीहरि के दिव्य चरित्रों का सारार्थ संदोहन करके तथा कुछ ऐसे भी जो इस ग्रन्थ में नहीं है उसे भी अर्थात् उन लीलाओं का भावात्मक एक ऐसे स्तोत्र की रचना करुँ जिसके श्रवण-मनन से सम्पूर्ण सत्संगिजीवन के श्रवण-मनन का फल मिल सके। ऐसा लोक हित का विचार करके भगवत प्रेरणा से उन्होंने स्वामिनारायण भगवान के एक हजार नामों वाले सर्व मंगल स्तोत्र को बनाया।

संत बडे परमारथी, देत सबन को ज्ञान।
हरि सन्मुख अनंत जीव,करन उरमें तान ॥

ऐसे सर्व मंगल स्तोत्र बनाये। लेकिन यह जानते थे कि इस भागदौड़ के समय मेंभक्तो के पास समय नहीं मिलेगा। इसीलिये सर्वमंगल के गुण से अनुप्राणित ऐसा लधुकाय तथापि पूर्णफल को देने वाला जनमंगल स्तोत्र बनाया जो संप्रदाय का संक्षिप्त स्तोत्र सकल सिद्धि को देने वाला है। जिसका विश्वास एवं श्रद्धा से पाठ किया जाय तो सम्पूर्ण संकट दूर हो जायेगा। ऐसा यह चमत्कारिक स्तोत्र है। श्रीहरि के स्वस्म, नाम, गुण एवं चरित्रों पर निर्मित एकसौ आठ नामो वाले इस स्तोत्रको शतानंद मुनिने गुम्फित किया है।

लोकभाषा में जितना समाज को समझाया जा सकता है उतना संस्कृत में नहीं। इसीलिये श्रीजी महाराज ने संतो को स्वरचित शिक्षापत्री का भाषांतर करने की प्रेरणा दी थी। श्रद्धालु भक्तों को जनमंगल अति प्रिय होने से श्री वैष्णावानन्द वर्णीने पद्यानुवाद किया था।

- दोहा -

मुनि चरित अनुसासो नाम कहुं शत आठ।
आगे अगणित इन नामको करहि अमितजन पाठ॥
भक्त कल्पदुम श्रीहरि, भक्ति धर्मवथु जात।
दाता बुद्धि दया जुत, ताही नमुं साक्षात् ॥
कुसुमगंध सुगंदजुत, अमित हार द्रव्य सार।
पूजन भक्त अनंतमिलि, श्वेत वसंतत धार ॥
आठ अधिक शतनाम हरि, जपततुरत फल देत।
धर्म अर्थ जनमोक्षकु इच्छित फल सबदेत ॥
स्तोत्र नाम जनमंगल, शोभाजुत हरि केर।
मंत्र अनुष्टुप छंद करि शतानंद मुनि प्रेर ॥
भक्तिनन्दन कीलक कहे, निश्रवे हरि को सार।
चहुवर्ग सिद्धि अर्थ जप, करहु हरि उधार ॥

- अध ध्यानम् - चोपाई -

वरनी वेश दर्शन रमनीयम्,
सचिर कमलमुक मंद हसनीयम्।
सुरनर मुनि पूजति मुद देहा,
धर्मनंदन चिंतन करु एहा ॥
वासुदेव श्रीकृष्ण कहावे,
नरनारायण प्रभु सब गावे।
भक्तिधर्मात्मजो अजनवा,
कृष्णो नारायण हरि भीनवा ॥
हरिकृष्ण धनश्याम कहावे,
धार्मिक भक्तिनन्दन गावे।
शुद्ध बृहद् व्रतधर कहावे,
इष्ट सदा पुस्मोत्तम भावे ॥
मास्त सुत प्रिय कहत सुधामा,
काली भैरव भीषन नामा ॥
जित इन्द्रिय जित आर कहावे,
तीव्र विरति आस्तिक कहावे।

- दोहा -

योग कला पर वरती कर, योगेश्वर अति धीर।
तीरथ कृतार्थिक पूज्य सदा, परमहंस गंभीर ॥

- चोपाई -

ज्ञानी क्षमा निधि सदा अनिद्रा,
ध्यान निष्ठ तप प्रिय राजिन्दा।
सिद्धेश्वर स्वतंत्र रहावे,
विद्या ब्रह्म प्रवर्तक कहावे ॥
पाखण्डोच्छेदन पटु प्यारे,
स्वस्वस्म अविचल स्थिति वारे।
निर्दोषित पुनि मूरति प्रसंता,
असुर गुस्को मोह करंता ॥
अति कारुन्य नयन सुखधामा,
उद्धव मग परवर्तक शामा।
साधुशील महाव्रत कहावे,
साधु विप्रकु पूजत भावे ॥
मख अहिंसक प्रतिपादन कर ही,
साकारो ब्रह्म वरनन वरही।
स्वामिनारायण पुनि स्वामी,
कालदोष निवारक नामी ॥

- दोहा -

सत शास्त्र के व्यसन हैं संद्य समाधि स्थिति कर्त।
कृष्ण मूर्ति स्थापित कर, कौल नाश कलि तर्त ॥

-चोपाई -

निर्दम्भीय प्रकाश स्वस्मा,
सर्वजीव हितकारक स्मा।
भक्ति प्रपोषक सुन्दर वागा,
चतुरवर्ग फल देत अथागा ॥
निर्मत्सर पुनि भक्त के वर्मा,
बुद्धिदत्ता अतिपावन पर्मा।
अबुद्धिहर ब्रह्मधाम सुदर्शा,
अपराजित कर आपके सर्सा ॥
समुदांत सतकीरतीय सारे,
आश्रित संसृति मोचन वारे।
सहजानंद उदार रहावे,
साधु धर्म प्रवर्तक कहावे ॥
कामदयकु दलित कुमारा,
विष्णु मखकर बारमवारा।
पंचदेव पूजन कृत भारी,

नैष्ठिक व्रत पोषक अद्यहारी ॥

- दोहा -

प्रगल्भ प्रतिज्ञ पुनि भक्तवत्सल निस्प्रेह ।
षट उपरमिजित समरथ, दीरघ दरशी दृगतेह ॥

- चोपाई -

सरल अशेष पुनि अद्रोहा,
सब उपकार निरहंकृति सोहा ।
नियामक उपशम थितिवारे,
विनयवान गुरु कहवत वारे ॥
रिपु अजाता निरलोभी रहाता,
महापुरुष अरु आतमदाता ।
रखहि अखंड सुहृद मर्यादा,
व्यास सिद्धांत सुबोधकजादा ॥
मननिग्रह युक्तिको जाने,
जमके दूत विमोच सयाने ।
पूर्नकाम सतवादी सुहाता,
गुनग्राही गत गर्व कहाता ॥
सदाचार अति वल्लभ श्यामा,
पुन्य श्रवन की रतन सुखधामा ।
नाना गुन चेष्टित शुभनामा,
सबमंगल सदस्य अनकामा ॥

- दोहा -

एहि प्रकार स्तोत्र यह, जनमंगल कर धर्म ।
एहि पढ्यो सो सब पढ्यो निश्चय मंगल कर्म ॥
जो सुनते सुनावे जो पढ़े भक्तिन तिहुं काल ।
नासत हैं सब पाप तेहि निश्चय कहत दयाल ॥

- चोपाई -

जो इनकु नर सेवत जेहिं,
यहु पुरुषारथ मिलवत तेहीं ।
दुर्लभ सो आशिष प्रसादा,
श्रीहरिकृष्ण की पावत पादा ॥
भूत प्रेत पिशाचिनि जेहा,
डाकिनी ब्रह्म राक्षसी नेहा ।
योगिनी बाल ग्रहादिक कृत्या,
सो उपद्रव नहि आवत सत्या ॥
जंत्र मंत्र रिपुकृत अभिचारा,
रोगादिक भय अजानकारा ॥
अयुतवेर इन पाठ कराई,
निश्चय सबदुःख नासत ताई ॥
दश- दश पाठ जो प्रतिदिन करही,
इष्ट सबहि सुख मिलवसु नरही ।
गृह त्यागी सब कहवत मारे,
दिन दिन पाठ करव इन सारे ॥

दोहा

जन मंगल विस्तार कर,
जनमंगल किये शाम ।
जन मंगल ताते जपो,
विष्णु सदा अठजाम ॥
जन मंगल सब जगत के,
अघको हर ही अपार ।
शतानंद मुख सुना कहे,
हे नृपति उर धार ॥

इस स्तोत्र में श्रीहरि का एक नाम अहिंस यज्ञ प्रस्तोता है । महाप्रभु अहिंक यज्ञ के प्रस्तुत कर्ता थे । जेतलपुर में महारुद्र किया गया उस समय एक दिन सभा में वेद अहिंसामय यज्ञ का प्रतिपदान करते है या हिंसामय यज्ञ का प्रतिपदान करते है इस पर पंडितो द्वारा चर्चा का आयोजन किये थे । उस सभा में दोनो पक्ष के पंडित उपस्थित थे । अहमदावाद के निर्भयराम शास्त्री, विरमगांव के आशाराम पंडित तथा वडोदरा के स्मशंकरशास्त्री जैसे अनेको पंडितो के मुख से अहिंसामय यज्ञ का प्रतिवादन हुआ था ।

इसके अलावा भुजमें कुबेरजी, जगजीवन तथा रामचन्द्र ए तीनो भाई थे, इसमें एक भाई भुज नरेश का दिवान था । उसने एकबार हिंसामय यज्ञ आरम्भ करवाया । जिस यज्ञ की आहुति के लिये असंख्य बकरा-बकरी को लाकर बांध रखा था । स्वामिनारायण भगवान उस समय भुजमें थे इसलिये यज्ञमें पधारने का आमंत्रण उन्हे भी दिया था। कितने संत हिंसक यज्ञमें जाने के लिये श्रीहरि को मना भी किये फिरभी यज्ञमें गये । उसी समय यज्ञ मंडप में स्थित भूदेवो के बीचमें अहिंसा यज्ञ का प्रतिपदान करके हिंसक यज्ञ का खंडन करके पशुबलि का विरोध करके सभी को छोडने के लिये कहकर चले आये । इसलिये शतानन्द स्वामी ने श्रीजी महाराज का एकनाम "अहिंसा यज्ञ प्रस्तोत्रे नमः" ऐसा रखकर चरितार्थ किया था ।

दूसरानाम साधु विप्र पूजक है । श्रीहरि संतो का संमान थे । ब्राह्मणो की पूजा करते थे । मांगरोल में बावली को खुद वाया, कारियाणी में तालाब खोदागया पिपलाणा में छ महिने विष्णुयाग करवाया जेतलपुर -डभाण में यज्ञ किये कांकरिया में ब्राह्मणो को भोजन करावाया तथा भिन्न भिन्न मंदिर की प्रतिष्ठा के समय रामनवमी, जन्माष्टमी, दिपावली, होली, नरसिंहजंयती प्रबोधिनी इत्यादि त्यौहारो पर बडा उत्सव करवा कर ब्राह्मणो को तथा संतो को पूजते और यथोचित स्वर्णालंकार वस्त्रो से संमानित करते । इसीलीये साधु विप्र पूजक नाम सार्थक है । इस प्रकार अनेको नाम शतानन्दमुनि ने प्रयुक्त किया है । महाप्रभु के सभी नाम उनके गुण तथा चारित्र के धोतक है ।

इस हिन्दी की रचना करनेवाले सद. श्री वैष्णवानन्द ब्रह्मचारी की सम्पूर्ण जानकारी की यथार्थता स्पष्ट नही है । क्योंकि उस समकाल में वैष्णवानन्द नामधारी पांच व्यक्ति हो चुके है । इसमें से कौन है यह स्पष्ट नही है, फिरभी कई ब्रह्मचारी के होने की संभावना है । कारण यह कि श्रीहरिलीलासिंधु नामक ग्रन्थ भी उन्ही का लिखा हुआ है । उनके ग्रंथ के अंत में "इति सहजानंद स्वामी शिष्य श्री वैष्णवानन्द वर्णी कृत" ऐसा लिखा मिलता है । यह स्तोत्र उन्ही द्वारा रचित है यह स्पष्ट होता है । वैष्णवानन्द वर्णी श्रीहरि के साथ ही फिरते रहते थे। उनके लिये भोजन बनाते, वे चटनी अच्छी बनाते थे । सभी कार्यो में श्रीहरि उन्हे चटनी बनाने का कार्य सौंपते थे । वे हलवद के चिनाणा गांव में उत्पन्न हुए थे । पूर्वाश्रम का नाम अंबाराम त्रिपाठी था । ब्रह्मचारी वैष्णवानन्द ने दिल्ही भाषा में सरल-सुबोध ऐसा अनुवाद करके सत्संग समाज पर बडा उपकार किया है । जिसे सरलता से लोग पाठ कर सकते है, अर्थ का बोध भी हो सकता है ।

श्रीहरि के अवतार का प्रयोजन

प्रो. सूर्यकांत भट्ट (भुज)

जब जब होय धर्म कै हानी ।
बाढहि महा असुर अभिमानी ॥
तब तब प्रभु धरि विविध शरीर ।
हरहि कृपानिधि सज्जनपीरा ॥

इसके साथ मुमुक्षु जीवात्माओ को मोक्ष पद देने हेतुभी भगवान का प्राकट्य होता है । भगवान के अवतार को समझना बहुत कठिन है । पूर्व के योगभ्रष्ट अथवा पुण्यशाली ही परमात्मा की मनुष्यलीला को समझ सकते है ।

बडे संत भी आज यही समझाते है कि कोइ राजा चारो तरफ घूमकर कहे कि मै राजा हूं तो उससे उसकी कींमत बढती नही है । उसे राजा के स्प में कोइ स्वीकारभी नही करेगा उनके पहचानने का कार्य उनके पास रहनेवाले ही करा सकते है । इसी प्रकार भगवान की पहचान तो सत्पुरुष, संतो द्वारा ही संभव है ।

एकबार श्रीजी महाराज ने स्वयं प्रश्न किया कि भगवान जीवके कल्याणार्थ अवतार धारण करते है तो क्या अपने धाम में रहकर जीवो का कल्याण नही कर सकते ? जब भगवान जैसा चाहे वैसा हो सकता है तो अवतार धारण का क्या प्रयोजन ? यदि भगवान के अवतार धारण करने से कल्याण करने का सामर्थ्य आता है, अवतार के बिना जीव के कल्याण का सामर्थ्य उनमें नही है तो भगवान की भगवत्ता में न्यूनता आजायेगी । इसीलिये भगवान अवतार धारण करके भी जीव का कल्याण करते है और बिना अवतार के भी जीवका कल्याण करने का सामर्थ्य रखते है । तो ऐसे भगवान के अवतार धारण करने क क्या प्रयोजन ? यही प्रश्न है ?

यह प्रश्न श्रीजी महाराज हमें समझाने के लिये तथा समझ को दृढ करने के लिये, भगवान में प्रेम, विश्वास, संपादन करने के लिये समय समय पर सभा करते थे ।

सभा में बडे-बडे संत, मुनिवर विराजमान थे । इस प्रकार के प्रश्न को सुनकर सभी लोग स्तब्ध रह गये । अपनी बुद्धि के अनुसार उत्तर देने लगे लेकिन संतोष नही हुआ । इसीलिये सभी लोग हाथ जोडकर कहने लगे कि हे महाराज ! आप ही इस प्रश्न का उत्तर दिजीये ।

इस प्रकार संतो की प्रार्थाना सुनकर श्रीजी महाराज ने कहा कि भगवान के अवंतार धारण करने का प्रयोजन यह है कि भगवान में जिससे प्रेम हो उस भक्त को सुख देने वह भक्त जैसा चाहता है उस स्प को धारण करते है । इसके अलावा भक्तो के मनोरथ को पूर्ण करने के लिये मानव मात्र स्थूल शरीर वाले होते है उनको प्रेम देने के लिये तथा उनके साथ आत्म सम्बंध के लिये भी अवतार धारण करते है । अपने सामर्थ्य को छिपाकर भक्तो के साथ पुत्रभाव रखते है । अथवा मित्रभाव या सखाभाव रखते है । कभी सगा सम्बन्धि का भाव रखते है। इस प्रकार अपने भक्तो के भाव को पूर्ण करने के लिये अवतार धारण करते है, यही अवतार धारण का हेतु है । इसके साथ जीव मात्र का कल्याण करते है । धर्म की स्थापना करते है । अब इसमें आशंका होतो कहिये । सभी मुनि हाथ जोडकरके महाराज कहने लगे महाराज ! अब यथार्थ उत्तर हुआ ।

इस प्रकार विचार किया जाय तो सर्व अवतार के अवतारी श्रीहरि जीवात्मा का कल्याण करने के लिये तथा सार्वत्रिक सुख देने के लिये इस पृथ्वी पर स्वंय पधारे थे । यह विचार करते रहे तो भी जीवन धन्य हो जाय। इसके साथ अपने आध्यात्मिक सुख का भी विस्तार होता रहे ।

साकोदरा (धोलकादेश) गाँव में अद्‌भुत चमत्कार

अपने साकोदरा के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १६-७-०६ के रविवार की शाम को यहाँके हरिभक्त बहादुरसिंह नारायणभाई नकुम की चि. पुत्री धीरजबा (उ. ४ वर्ष) और उनकी बहन दादाजी के साथ दर्शन करने आई थी । छोटी उम्र की होने के कारण बच्ची दर्शन करके आश्चर्यपूर्वक खेलते-खेलते १० फूट के गहराई वाले पानी भरे कूएँ में गिर गई । उसकी बहनने यह बात वहाँ उपस्थित दादाजी और हरिभक्तों को बताई और कुएँ में उन्होंने बच्ची को निकाला तो सभी के आश्चर्य के बीच बच्ची बिना पानी पीए पूर्ण होश में और बिना कीसी भी चोट के सुरक्षित निकाली गई । सचमुच ! सर्वोपरि आचार्य महाराजश्री द्वारा मंदिर में प्रतिष्ठित किये गये श्रीजी महाराज प्रत्यक्ष हैं । धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री श्रीहरि का साक्षात् स्वरूप है ।

- कालुभाई हीराभाई पटेल, साकोदरा

माँ

- साधु हरिवल्लभदास गुरु महंत
नारायणप्रसादास (महेसाणा)

अपने शास्त्रों में पाँच जकारो को दुर्लभ बताते हुए कहा गया है कि -

जननी जन्म भूमिश्च जाहनवी च जनार्दन ।
जनकः पंचम श्चैव जकाराः पंच दुर्लभाः ।

अर्थात् - जननी, जन्मभूमि, जाह्नवी, जनार्दन, जनक ये पंच जकार दुर्लभ है । जब राम लंका को जीत कर विभीषण को सोंपते है तब लक्ष्मण कहते है कि "में लंकान रोचते" हे लक्ष्मण ! जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसि । जननि एवं जन्मभूमि स्वर्ग से भी दुर्लभ है । यह लंका सोने की है तथापि अपनी अयोध्यानगरी स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है । इस के बाद जाह्नवी अर्थात् गंगाजी, जिस गंगाजी में स्नान करने से जीवात्मा के पाप का नाश हो जाता है । इसी लिए कहा गया है कि "गंगा पाप प्रणाशिनी" । गंगा तो पापीयों के पाप को धोने वाली है । गंगा का यह माहात्म्य शास्त्रों मेंखूब वर्णित है । इस के बाद जनार्दन अर्थात् भगवान विष्णु, इनकी प्राप्ति भी दुर्लभ है । इसके बाद जनक अर्थात् पिता, अपने पिता की प्राप्ति भी दुर्लभ है । सब से महत्व का अंत में आता है जननी शब्द, जननी का अर्थ होता है माँ, जन्म देने वाली माता ।

यथार्थ रूप से माँ शब्द बहुत प्यारा है।

यह शब्द बहुतायत में प्रयुक्त है - जैसे जन्म देनेवाली माता, पृथ्वी माता, कुलदेवी माँ गायको भी माता ही कहते हैं । शास्त्रों में माँ को पांच प्रकार से बताया गया है ।

राजपत्नी गुरुर्मत्नी भ्रातृमी तथैवच ।
पत्निर्माता च माता च पंचैता
मातरस्मृताः ॥

अर्थात् - राजपत्नी, गुरुमत्नी, बडे भाई की पत्नी, अपनी पत्नी की माता, अपनी माता - ए पांच प्रकार की माता कही गयी है ।

माँ यह पूर्ण शब्द है । माँ यह एक पूर्ण महाविद्यालय है । माँ श्रृंगार का आधार है । मंत्र-तंत्र-यंत्र की सफलता माँ है । जिसकी कोई उपमां न दीजा सके उसे ही माँ कहते हैं। इस शब्द की कोई सीमा नही है - सम्पूर्ण - परिपूर्ण शब्द माँ है ।

उपर जिसका अंत नही,
उसे आसमान कहते हैं ।
जहाँ मे जिसका अंत नही,
उसे माँ कहते हैं ।

परमात्मा को प्राप्त करने की सीढी माँ है । गुजराती भाषा में एक कहावत है "गुण विना मोणों कंसार, अने मा विना सूनो संसार ।" मा यह अविरत बहता हुआ झरना है । जिन महान पुरुषों ने सिद्धि प्राप्ति की है, उसमें मा का पूर्ण सहयोग रहा है । ऐसा कहाजाता है कि एक सफल पुरुष के पीछे एक स्त्री का हाथ रहता है । शिवाजी, महाराणाप्रताप इन दोनो के पीछे इनकी माता का पूर्ण सहयोग था जिससे वे उत्तरोत्तर अपनी वीरता में बढते रहे और इतिहास पुरुष बन सके । किसी कविने कहा है कि -

जननी जणतो भक्ते जण,
कां दाता कां शूरवीर ।
नहितर रहेजे वाझणी,
मत गुमावीश नूर ॥

माँ शब्द तोऐसा है कि सुनते ही हृदय में विराजमान सर्वोपरि बाल घनश्याम याद जाते है, माँ की ऐसी प्रेम भरी शीतलता है । किसी कवि ने कहा है -

जे मस्ती आंखो मा छेते मदिरालय मां
नथी होती,
अमीरी दिल नी कोई मोटा महात्मा मां
नथी होती ।
शीतलता पामवाने क्यां दोड मुके ओ
मानवी,
जे मानी गोदमां होय छे ते हिमालयमां
नथी होती ॥

इसीलिये तो अपने साहित्यकारोने सुंदर प्रार्थना को समझाया है, "भूलोभले बीजु बंधू मा-बापने भूलशो नही । माँ शब्द केविषयमें क्या कहें ? मा अगाध समुद्र है, मा तथा क्षमा दोनो एक ही है । साहित्यकारों की भाषा में कहेंतो "जेना प्रेम ने क्यारेय पानखर ना पडे, तेनुं नाम माँ" । फिर भी इस संसार की दो करुणता है । माँ विना का घर, घर विना की माँ ।" नत मस्तक प्रभु को प्रार्थना करें कि हम भी मा-बाप की सेवा करे ऐसी शक्ति दें ।

"घर मा घरडो माँ-बाप ने साचवे नहि
ने.....
घरडा घरमा डोनेशनआपे,

जीव दया के लिये रुपये लिखाते है, ऐसे जीव दया प्रेमी कहाने वाले जीवदया का अपमान करते हैं । पत्नी अपनी पसंद की मिल सकती है, लेकिन माँ-बाप बडे पुण्य से मिलते है ।

पसंदगी से मिलने वाली चीज के लिए पुण्य से मिलने वाली चीज को कभी ठुकराना नही ।

. सच्ची स्वतंत्रता

- साधु घनश्यामप्रकाशदासजी

अपना देश १५० वर्ष तक अंग्रेजो के हाथ में रहा था । भारत स्वयं अपनी गुलामी की यातनाओं के महासागर में अपनी जिंदगी को बिताया । अरबीयन, पाशीयन, तुर्की, मुगल, अफगानी, हूण इत्यादि विदेशी लोग भारत पर बार-बार आक्रमण करके बडी निष्ठुरता के साथ भारत को पाइमाल बनाने लगे और स्वयं इच्छित वस्तुएँ लेकर गये-भारत को गुलामी देकर गये । बडी क्रूरता से भारतीयों की हत्या करते, संपत्ति लूटते, महलों को तोडते, मंदिरो को तोडते और लूटते, इस प्रकार भयंकर त्रास देते थे । भारत को इस गुलामी से मुक्त करने के लिए, गांधीजी, भगतसिंह, लाला लजपतराय, सुभाषचंद्र बोस, चंद्रशेखर आजाद, गोपालसिंह गोखले, सावरकर जैसे लोगों में क्रांति के लिए जागृति आयी । कलकत्ता के गवर्नरपद पर आरूढ होनेवाले किले ने अपने लोर्ड विलियमने पार्लामेन्ट के प्रवचन में कहा था कि जबतक भारत को जड-मूल से उखाड नहीं देंगे तबतक उसे जीतना बडा कठिन है । इसकी जडमूल थी आध्यात्मिक तथासांस्कृतिक महान नेताओं की आगेवानी । सत्याग्रह की लडाई से भारत ने शांति का श्वास लिया, यही देशकी आजादी थी ।

परंतु यह आजादी पूर्ण नहीं थी, व्यावहारिक आजादी की प्राप्ति के लिए लोग अपनी रीति-रिवाज, अंधश्रद्धा, प्रतिष्ठा, दंभ, देखादेखी, सेभरे हुए थेइन सभी से स्वतंत्र होने के लिए सत्संग का सहारा लेना अनिवार्य था। व्यावहारिक स्वतंत्रता के बाद अपनी अंत:करण की इन्द्रिया - मन, बुद्धि, काम, क्रोध, लोभ, आशा, तृष्णा, असूया, मान जैसे शत्रुओं से जन्मोजन्म से पीडित होने वाले लोग, इनसे मुक्ति पाने के लिए भगवान तथा सत्पुरुषों की खोज करने लगे । भगवान को ऐसे शत्रु थोड़े भी पसन्द नहीं हैं । यह अहं एवं ममता स्मी दीवाल इतनी मोटी है कि जिससे आरपार दिखाई नहीं देता । पंच विषय तो सबसे बडेशत्रु हैं, यह कभी भगवान को भजन करने ही नहीं देते । बाधक बने रहते है । अब ऐसी स्थिति में यह विचार करना चाहिए कि हमारा जीवन पशुओं जैसा है या सज्जनो जैसा है, तभी इन पंच महाविषयों से छूट पाना संभव होगा ।

भगवान श्री कृष्णाकी बासुरी इतनी अधिक प्रिय थी कि लोग पागल हो जाते थे, इसका कारण यह है कि - लोगों में अहं नहीं था । भगवान को जैसा बजाना हो वैसा बजायें इसीलिए कहा है कि -

''हूं टणे हरि ढूकडा ते टळाय दासे रे''

इसीलिए अहं भाव दूर हो जाय तो भगवान तो साथ ही है । श्रीजी महाराज के प्राकट्य कामूल हेतु भक्तों को प्रेम देना तथा उनका प्रेम पाना, भक्तों के अज्ञान का नाश करना, अहं को हटाना, इसी से अज्ञान उत्पन्न होता है । जब तक अज्ञान बना रहेगा तब तक प्रभु की प्राप्ति सम्भव नहीं है । नियम-श्रद्धा-विश्वास से परमात्मा की तरफगति करना संभव है ।

अपने स्वस्म का ज्ञान प्रकृति-पुस्म से परे है, अत्यन्त सुख को देने वाला है । दु:ख रहित है । आज तक सत्संग की दुनिया में देखें तो ख्याल में आयेगा कि कितने भक्त हुए है - जैसे भरत जी राज्य का त्याग किये तो मृगशावक में वासना रह गयी, इस पर विचार तो करते रहना चाहिए कि ऐसी मेरी स्थिति तो नहीं हो रही है ।

- साखी -

एक मृग केकारण भरत धरेतीन देह ।
तुलसी कहे क्या गति सबसे करत सनेह ॥

तो अपने जीव में कितने मृग आये होंगे ? श्रीजी महाराज व.अ. २० वे मेंकहते है कि जीव जो पूर्व जन्म में किया होता है उसी का परिपाक अन्य जन्म में पाता है । जैसे लोंढा अग्नि के साहचर्य से तद्स्म हो जाता है, ऐसी ही वासना की प्रकृति कही गयी है । जीव पंच विषय में फंस कर इसी को सुख मानलेता है । वचनामृत के ३४ वें प्रकरण में श्रीजी महाराज कहते है कि सभी सुख के धाम मात्र परमेश्वर ही है । जीव नाशवंत है । तुच्छ पदार्थो में जाकर फंसता है । इसका कारण अज्ञान है । जिस प्रकार नदी का पानी समुद्र में ही जाता है, इसी प्रकार मनुष्य का प्रवाह विषय की तरफ रहता है ।

मुक्तानंद स्वामी साधु होने के लिए

धांगध्रा के तुलसीदास बाबा के यहाँ गये । वहाँ उन्होंने बताया कि ब्रह्मचर्य पालना बडा कठिन है, मैं ४० वर्ष उज्जैन गया था उस समय रास्तापूछने के लिये स्त्री की लटक-चटक चलती चाल आज भी भूल नहीं सका हूँ । इसीलिये मनसे वासना निकालना कठिन है ।

महाराजने वचनामृत १२ वें प्रकरण में कहा है कि जीव को जब संत का समागम होता है तो परमेश्वर केस्वस्प का ध्यान हृदय में उतरने लगता है, जिसके कारण शरीर का नाश होजाता है । वचनामृत प्रकरण १ में महाराज ने कहा है कि विषय से निवृत्ति का कारण आत्मा का निष्ठा केसाथ माहात्म्य ज्ञान को समझना है । अंत: करण की इन्द्रियो के साथ हुई भक्ति भगवान कभी स्वीकार नहीं करते । जब तक ब्रह्मस्प नहीं होते तब तक पुरुषोत्तम की भक्ति का अधिकार नहीं पाया जा सकता ।

वृत्ति को पंच विषयों मेंसे हटाकर भगवान के माहात्म्य में स्थिर करना चाहिए । भगवान सर्वोपरि, सदादिव्य, साकार, कर्ता-हर्ता, एवं प्रगट स्प में है। ज्ञान के बिना भगवान शरीर से चिपके ही क्यों न रहें तो भी सुख की प्राप्ति संभव नहीं है । जब तक आत्मतत्व का चिन्ह नहीं होगा, तब तक सभी साधना झूठी कहीं जायेगी।

प्रत्येक वचनामृत में जिस प्रकार सूई के पीछे धागा भी आता है, उसी प्रकार अपनी वात कहकर स्वतंत्रा की प्राप्ति हेतु प्रयास कर रहे हैं । जैसे राजा जनक राज्य का सम्पूर्ण कार्यभार देखते हुए, भी निर्लिप्त रहते थे वैसे ही यदि आपका जीवन होगा तो विषयाशक्त नहीं हो सकते । वासना के अधीन न रहकर स्वतंत्र होना ही मोक्ष की तरफ गति करना ब्रह्मप्राप्तिका साधन है । इसीलिये मन द्वारा ब्रह्म का संग करे तो उनके गुण अपने में आयेंगे । किसी ने यथार्थ ही कहा है - "मन नु घोडे तेने हरिवर न तर छोडे"

इसीलिये इन्द्रियों को वश में करने के लिये नियम में रहकर विषय की धारा को कुंठित किया जा सकता है । अर्जुन को भगवान श्रीकृष्ण ने यही मर्म कहा था । तभी उसके मोह का नाश हुआ था ।

व.लो. ६ में कहा है कि एक दोष में सभी दोष आ जाते हैं । तो वह दोष कौन हैं ? देहाभिमान स्मी दोष ऐसा है कि जो अखंड आकर निवास करता है। इसके अलावा आत्मनिष्ठा स्मी एक गुण हो तो गुणमात्र आकर बैठता है । किसी आहार विशेष के खाने से सुख की प्राप्ति नहीं होती, इसके लिए साधना करनी पडती है । महाराज अंतिम व.मृ. ३८ वे में कहते हैं कि जिसे द्रव्य का लोभ तथा स्त्री केप्रति वासना, रस के प्रति जिहवा की आसक्ति, तथा देहाभिमान तथा कुसंगी में प्रेम हो जाय तथा सबंधी में प्रेम हो जाय तो उसे कभी सुख की प्राप्ति नहीं होती ।

वासना प्रलोभन वृत्तियों को सहायता न करे तो ही प्रकाश होगा । हृदय शुद्ध होगा । श्रीजी का दीपक दिखाई देगा । फिर तो अलौकिक प्रकाश ही प्रकाश प्रगट होगा । अंतर में दिव्यता का संचार होगा । यही यथार्थ आजादी यही मुक्ति और यही स्वतंत्रता है ।

पृष्ठ ५ से आगे.....

कर्मयोग एक विहंगावलोकन

जीवन में सुख दु:खकी सुद्धि करती है। धर्म तथा अधर्म दोनो प्रवृत्ति से होती है । धर्म से अभ्युदय होता है ।

कर्म में आलस्य, प्रमाद का आना तमोगुण है । कर्म की एक कुशलता यह भी है कि कर्म परिवर्तित होता रहता है । उपनिशद् वांचने से थको तो गीता वांचन करो, गीता से थको तो पुराण वांचन करो कुछ परिवर्तन करते रहना चाहिएं ।

उपासना तो मनुष्य का एक कर्म है। इससे मुक्ति नही मिलती । यही जब भगवान के लिये की जाये तो भक्ति कही जाती है । भक्ति मानस कर्म है । ज्ञान भी ब्रहविषयक होने से भक्ति है । अर्थात कर्मको छोडकर अन्य सभी बंधन करनेवाले है । कर्म आशक्ति रहित होकर शोक-मोह से रहित होकर कर्तव्य का पालन करो । कर्म में दो प्रकार का बंधन है । १. फल प्राप्त करना २. कर्म पूर्ण करना । संक्षेप में कहना यह की कर्म करो और बंधन से विनिर्मुक्त रहो । यह जीवन जीने की एक कला है । एक अमोघ युक्ति है ।

संवत २०६३ के वर्ष का 'दट्टा' प्रकाशन

अपने अहमदाबाद श्री स्वामिनारायणमंदिर से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से संवत २०६३ के वर्ष तिथि त्यौहार और देश-विदेश के सभीमंदिरो के पाटोत्सव के समय पत्रक का 'दट्टा' प्रकाशन किया गया है । जो कुछ ही समय में अपने मंदिर के साहित्य केन्द्र से प्राप्त होंगा ।

सत्संग सुरभि :

अनगर अजब बना है आज

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (केनेडा)

अहमदाबाद के हरिभक्तोंने महाराज को पत्र लिखा "हे महाराज इस समय अहमदाबाद में अंग्रेजो का राज्य आया है। पेशवा सरकार का अंत आ गया है। यहाँ के अंग्रेजी अधिकारी हमारे तिलकचन्दन को देखते हैं, संतो को देखते हैं तो पूछतें हं कि आप केगुरुकौन है। हमे आपके गुरुसे मिलना है। हमने कहा कि हमारे गुरुभगवान सहजानंद हैं वे इस समय गढपुर में विराजमान है। वे पूछते है कि क्या वे यहाँ नहीं आते ? तब हमने कहा कि यहाँ की राज्य सत्ता ने मना किया है तबउस अधिकारी ने हंसतेहुए कहा कि - वह राज्य सत्ता चली गई अब उन्हें बुला लीजिए - हमें बडा आनंद होगा।

इसीलिये हे महाराज ! पत्र मिलते ही तुरंत संतो के साथ अहमदाबाद पधारिये। पत्र पढकर महाराज बहुत प्रसन्न हुए। गढपुर से संत-हरिभक्तों के साथ महाराज अहमदाबाद आने के लिए निकल गये। अहमदाबाद के बाहर पहुँचते ही बडे उत्साह के साथ उनका स्वागतोत्सव किया गया। सत्संग में एक नया उत्साह था क्योंकि अंग्रेज सरकार ने आने के लिए मना किया था, आज दूसरी सरकार सम्मान के लिये उत्सुक है। श्रीजी महाराज के स्वागत में सारा सत्संग समाज नाना प्रकार के वाद्य यंत्रो के साथ आगेवानी के लिए खडा था। सबसे बडे संत मुक्तानंद स्वामी महाराज की आज्ञा लेकर रथ से नीचे उतरे। मस्तक पर टोपी पहने हुए कमर में डुपट्टा बांधकर हाथ में करताल लेकर भगवान की मोहक मूर्ति का स्मरण करते गान के साथ नृत्यकरने लगे कि आज उसी इतिहास का लोग स्मरण कर रहे है।

शोभायात्रा इतनी अद्‌भूत थी कि स्वामिनारायण की जयजयकार श्रीनगर में चारो तरफ व्याप्त हो गयी। संगीत के सुमधुर प्रावह में स्वामिनारायण का षडक्षरी महामंत्र सम्पूर्ण अहमदाबाद में जादू की तरह असर करने लगा। शहर के राजमार्गो पर यह शोभायात्रा एक इतिहास का सर्जन कर दी। इस प्रवाह में व्यापारी भी ऐसे खिंच गये किअपने लेखा-जोखा की कांपी में स्वामिनारायण स्वामिनारायण लिखने लगे।

अहमदाबाद के बडे-बडे शेठ लोग हीराचंद चोकसी बेचर लश्करी, माणक वाला, छडीदार, कुबेरसिंह इस प्रकार के अनेंको अग्रगेण्य शहर के निवासी इस शोभायात्रा में नृत्य कर रहे थे। सम्पूर्ण नगर आनन्द में डूब गया था। अटारियो से महिलायें पुष्प-चन्दन-चावल, अबीर-गुलाल इत्यादि की वर्षा कर रही थी।

कृपालु श्रीहरि शहर के राज मार्ग से धूमते हुए नवावास में आये। जहाँ पर हजारों मनुष्य एकत्रित हुए है। नर्मदा के किनारे से अजुभाई एक भक्त भी आये थे जिन्हें भगवान के प्रति बहुत प्रेम था। महाराज अहमदाबाद आनेवाले है यह जानकर दर्शन के लिए आये थे। श्रीजी महाराज के पास सभा में आकर दंडवत करने लगे। प्रभुने कहा - "अरे अजुभाई ! आप कहाँ से ? आप का गाँव तो बहुत दूर है।"

महाराज ! यहाँ के व्यापारी मोहनभाई शेठ हमारे मित्र हैं। इनके पुत्र का विवाह है, इसी प्रसंग में आया हूँ। आप यहाँ पधारे हैं इसीलिए आपके दर्शन हेतु हम यहाँ आये हैं।

विवाह कब है ? महाराज ने पूछा। आज ही सामको विधि है। अजुभाई ने कहा। हे महाराज ! मैं मोहनभाई शेठ को तथा घर के सभी सदस्यो को तैयार किया हूँ। आपको इनके घर चलना है इनके मकान के सामने सभा हो सके इतनी जगह है, सभी लोग स्त्री पुरुष मर्यादा में बैठेंगे। हमारे मित्र को आपके दर्शन की खूब लालसा है। आप संतो के साथ विवाह प्रसंग पर पधारेंगे तो खूब आनन्द होगा।

महाराज संतो के साथ अजूभाई के कहने पर मोहनभाई शेठ के यहाँ पदार्पण करने के लिए तैयार हो गये। श्रीजी महाराज की बाट देखकर शेठ दरवाजे पर खडे रहे। प्रभु पधारे उस समय शेठ ने पुष्पहार से स्वागत किया। वंदन किया। विवाह मंडल के बगल मेंएक बडे आसन पर विराजमान किया गया आगे संत बैठे बगल में हरिभक्त बैठे। अजुभाई को महाराज ने कहा विवाह किसका है - बुलाइये आशीर्वाद दें। शेठ अपने पुत्र को साथ में लेकर आये। पुत्र आकर प्रणाम किया। श्रीहरि खूब प्रसन्न हुए। कंठ में पुष्प हार था जिसे निकाल कर वरराजा के गले में पहना दिये। आज उसकी भाग्य खुल गयी। युवान आनन्दित हो गया, सभी उसकी भाग्य की प्रसंशाकर रहे थे कि अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति स्वयं पुष्पहार गले का पहना रहे हैं।

युवान पुत्र का पिता भी प्रसन्न होकर श्रीहरि को दंवडत् प्रणाम करने लगा।

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १५

सत्संग लाघवपत्रिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

मफ़त का सोना मौत का कारण

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

श्रावण महीना भजन-भक्तिका समय । प्रत्येक मुमुक्षु अपनी श्रद्धा तथा भावना के अनुसार इष्टदेव की पूजा भक्ति करते हैं । इसमें भी श्रावण महीने में भगवान शिव की पूजा विशेष रूप से होती है । कोई सद्भाव से करता है, कोई निष्काम भाव से करता है, लेकिन भोलानाथ तो सभी पर प्रसन्न होते है ।

एकबार चारजन एकत्रित हुए, उनकी मित्रता ऐसी कि दूसरे देख कर ईर्ष्या करते थे । वे सब मानो कि जैसे कोई कंपनी खोलनी हो इसतरह एकत्रित हुए। हम क्या करे, पैसा मिले ऐसा विचार करना चाहिए । कोई कहता ब्रह्माजी का तप करना चाहिए, कोई कहता विष्णु भगवान लक्ष्मीपति है उनकी उपासना करनी चाहिए । तीसरे ने कहा भोलाजी की उपासना करनी चाहिए, यह सुनकर सभी भोलानाथ की उपासना करने लगे, महादेवजी भोला भी है, सीधे भी हैं । इसीलिये हमारे उद्देश्य अवश्य सिद्ध होंगे ।

श्रावण मास से शुभारम्भ किये । जंगल में गये । एक शिवालय था, सन्निकट में बिल्ववृक्ष था । उस के सन्निकट में स्फटिक जैसा निर्मल जलाशय था । वे सभी चारो मिलकर संयुक्त उपासना आरम्भ किये ।

किसी ने बिल्वपत्र एकत्रित किया, कोई तालाब से जल लाया, सभी ॐ नमः शिवाय के जयघोष के साथ बिल्वपत्र चढाना प्रारम्भ कर दिया । बाद में प्रतिदिन की यह आराधना प्रारम्भ हो गयी । इस प्रकार छ महीने बीत गये । ॐ नमः शिवाय के नाद से सम्पूर्ण वातावरण पवित्र बन गया । तंन-मन-शांत होने लगा । जिससे अपनी तपस्या की मात्रा बढा दिये । इन चारो की तपस्या पर भोलानाथ को दया आ गयी । पार्वतीजी को कहने लगे । यह चारो जन छ महीने से मेरी निरन्तर उपासना आराधना कर रहे हैं । मैं प्रसन्न हुआ हूं, तो देवी हम दोनो चलते है, इन्हें दर्शन देकर मनोरथ पूर्ण करते हैं, अच्छा प्रभो आप की जैसी आज्ञा ।

इधर चारो जन प्रभुको बिल्वपत्र चढाते हैं । प्रभु दर्शन देकर कहते हैं, तुम चारोने जन मेरी उपासना बडी भक्ति भाव से कि है इसीलिये मांगो क्यां चाहिए । सभी ने एक साथ कहा प्रभु सभी को एक साथ वरदान चाहिए, सभी को सोना चाहिए । महादेव ने कहा सोना प्राप्त करके सुखी नहीं हो सकते । वे सभी जिद कर बैठेप्रभु हमें केवल सोना चाहिए । अच्छा प्रभु तो भोलानाथ हैं । उन्हों ने तथास्तु कहदिया । वहाँ से अदृश्य हो गये । इसके बाद उनचारों के बीच में १० किलो का सोना आ गया । अब तो वे सभी खुश-खुश हो गये ।अब वे सभी सोना लेकर अपने गाँव जाने के लिए निकल पडे । रास्तेमें जाते समय विचार करने लगे कि जब इतना सोना अपने पास है तो भूखे मरने की क्या जरूरत है ? सभी ने निश्चित किया कि दो जन सोना की रक्षा में रहे और दो जन बगल के गाँव में जाकर मिठाई बनवाकर ले आये - खाते पीते - आनन्द से चलेंगे । बाद में दो मित्र गाँव में मिठाई लेने गये, दो मित्र सोना की रक्षा में वही रहे, जो दो सोना की रक्षा में थे उसमें से एक ने कहा यदि हम दोनो हीसाथ रहे होते ५ किलो भाग में मिलता अब तो ढाई कीलो ही मिलेगा, भाग तो देना ही पडेगा ।

ऐसा किया जाय कि उन दोनो को भाग न मिले, दूसरे ने कहा ऐसा कैसे हो सकता है ? नहीं कुछ तो करना ही पडेगा । उधर गाँव में मिठाई जो लेने दोजन गये थे वे भी यही सोच रहे थे कि उन दोनो को साथ नहीं लाये होते तो दोनो को आधा आधा भाग मिलता, अब तो चार भाग करना ही पडेगा । अब ऐसा करते है कि सोना हम दोनो को ही मिले ।

मिठाई की दुकान से लड्डू खरीदे तथा दूसरी दूकान से जहर भी खरीदो । आगे आकर लड्डू को फोड़कर बीच में जहर मिलाया, पुनः जैसे का तैसा कर दिये । वहाँ से आगे चल दिये बडे आनन्द में ।

वहाँ पहुँचते ही दोनो प्रतीक्षा करते हुए मित्रों ने कहा अच्छा जल्दी आ गये, अब सामने जलाशय से पानी भी भर लाओ, साथ मैं बैठकर आनन्द से खायेंगे - पीयेंगे । अब वे दोनो मित्र साथ में ज्यों हि पानी में उतरे की इन दोनोने ऊपर से बडे बडे पत्थर फेंके और दोनो ही वहीं मर गये । अब दूसरे दोनो मित्र बड़े आनंद के साथ वापस आकर लाडू को खाने लगे, परिणाम क्या आया ? भोलानाथ ने कहा था कि सोना आप सभी को सुख नहीं देगा ।

मित्रो ! आप को यह बात कैसी लगी । तो याद रखना कि सम्पूर्ण सोने की लंका राजा रावण की थी । लेकिन किसी काम में नहीं आयी । हनुमानजी उसे जला दि । द्वारिका सम्पूर्ण सोना की थी, वह भी काम में नहीं आयी ।

इसीलिए यदि आप सुखी होना चाहते हो तो भगवान स्वामिनारायण ने १४० वें श्लोक में बताया है कि अपने वर्णाश्रम केअनुसार उद्यम, शक्ति, सामर्थ्य के अनुसार करना चाहिए ।

इस में से जितना मिले उतने से ही संतुष्ट रहना चाहिए । उसी में सुख है । इसीलिएकहावत है कि - "मेहनत का फल मीठा" तो भगवान की प्रार्थना, तप अवश्य करना लेकिन सोना नही मांगना, उद्यम मांगना उससे जोमिले वहसोना से भी अधिक सुखी करेगा ।

तप करने से विद्या मिलती है ?

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

पुराने समय की बात है । पहले समय में ऋषि मुनि जंगल में रहते थे । जंगल में निवास बनाकर रहते थे । यवाक्रित नाम का एक युवान था । उसने यह विचार किया कि मुझे विद्वान होना है । विद्या का पारगामी होना है । सब से श्रेष्ठ होना है । लेकिन पुस्तक को हाथ मेंनहीं पकडना है । वह यवक्रित भारद्वाज का पुत्र था । इस यवक्रीत के आश्रम के पास ही रैभ्य मुनि का आश्रम था । रैभ्यमुनि बडे विद्वान थे । उनके दो पुत्र थे । एक का नाम परावसु तथा दूसरे का नाम अर्वावसु था । ये दोनो भाई बाल्यावस्था से खूब विद्या का अभ्यास करके विद्वान बने थे । यह यवक्रीत अर्वावसु एवं परावसु का उत्तम मित्र था । वह साथ में खेलता था । जंगल में धूमने जाता था । पवित्र नदी में स्नान करता, लेकिन न पढने के कारण अज्ञानी था ।

एक समय कीबात है । धीरे-धीरे उसके यहाँ आमंत्रण आने लगे । किसके लिये ? ख्याल है न । दोनो भाईयों के लिए । परावसु एवं अर्वावसु के लिए । क्योंकि उनके पिता रैभ्य मुनि के पास अभ्यास किये थे । उनके लिए राजा महाराज का पत्र आता था । उनके लिए हाथी-रथ-पालकी आती थी । यह भव्य संमान देखकर यवक्रीत को ईर्ष्या हो गयी । मेरे साथ बडे होने वाले दोनो भाईयों का इतना सम्मान हो रहा हैं । और मैं घूमता रहता हूँ । मुझे कुछ मिला नहीं । मुझे इनके प्रगति का कारण ख्याल है । इतना आदर संमान समाज में क्यों हो रहा है । अब हमें भी विद्वान होना है । मुझे भी इन के जैसा पूज्य बनना है । लेकिन मुझे पुस्तक नहीं पढना, गुरुकी सेवा नहीं करना, हमें तो मात्र तप के बल से सभी प्राप्त करना है ।

यवक्रीत तप प्रारंभ कर दिया । इन्द्र को प्रसन्न करने केलिए कठोर तप करने लगा । पहले आहार बाद में आहार के विना केवल पानी पीकर तप करने लगा । गर्मी-ढन्ड़ी वरसात को सहन करने लगा । बाद में वायु भक्षण करके तप आरम्भ किया अब इन्द्र देव प्रसन्न हो गये, इन्द्र वर मांगने को कहे, तो यवक्रीत ने कहा मुझे बिना पढे विद्या प्राप्ति करनी हैं । इन्द्र ने कहा विनाविद्याभ्यास के विद्या नहीं मिलती परीश्रम करो, गुरुकी सेवा कर इन्द्र तो इतना कहकह वापस चले गये । यवक्रीत हठ करके तप द्वारा ही विद्या प्राप्त करना चाहता था । हठाग्रही पुनः इन्द्र का तप आरम्भ किया । पुनः उसी उत्साह से तप आरम्भ किया, उसे समझावे कौन कि विद्या विना अभ्यास एवं विना गुरुकी सेवा से नही आती है । वह तप प्रारम्भ से पहले गंगा स्नान करने जाता । एक दिन उसने एक दृश्य देखा । एक बृद्ध ब्राह्मण मुठ्ठी में माटी भरकर गंगा के प्रवाह में डाल रहा है । यही क्रिया बार-बार करते देखकर यवक्रीत जाकर पूछा अरे वृद्ध ब्राह्मण यह क्या कर रहे हो । वह ब्राह्मण उसे विना देखे अपनी क्रिया चालू रखी । बार-बार पूछने पर जब उत्तर नहीं दिया तब यवक्रीत ने उसका हाथ पकड़कर पूछा - तब वृद्ध ब्राह्मण ने कहा मुझे गंगापार करना है । गंगा के प्रवाह को रोककर मिट्टी का बंध बनायेगे और उसी से पार होंगे । यह सुनकर यवक्रीत जोर-जोर से हंसने लगा । अरे बुड्ढे तुम्हे बुद्धि नहीं है इस तरह तो तुम्हारे कितने जन्म बीत जायेंगे और बन्ध नहीं बन पायेगा । एकदम असम्भव कार्य है । पुनः ऐसा बोलकर हंसने लगा । तब वृद्ध ने कहा यदि तुम बिना पढे विद्या प्राप्त करना चाहते हो तो मैं मुठ्ठी-मुठ्ठी माटी से क्यों बन्ध नहीं बना सकता हूँ । विद्या की साधना की सामने यह तुम्हारा तप मुठ्ठी भर मिट्टी के समान है । यवक्रीत की बुद्धि में यह बात उतर गयी । इस बात को समझाने केलिये इन्द्र ने वृद्ध ब्राह्मण का स्म धारण किया था । बाद में इन्द्र ने कहा अब जा तुम्हें विद्या अवश्य मिलेगी लेकिन अभ्यासकर गुरु की सेवा कर, सरस्वतीजी तुम पर प्रसन्न होगी । पश्चात् यवक्रीत वहाँ से भारद्वाज ऋषि के आश्रम जाकर गुरु सेवा करतेहुए विद्याभ्यास किया और बडा विद्वान हुआ ।

हे मित्रों ! आप सब को ख्याल आया होगा कि विद्या कैसे प्राप्त होती है । विद्या विद्याभ्यास के मात्र पुस्तक की पूजा से यह कार्य सम्भव नहीं है । प्रत्येक पन्ने को पढ बाद में ख्याल आयेगा, क्या है । स्वामिनारायण भगवान ने वचनामृत में कहा है कि जो मनुष्य पुरुषार्थ करता है उसी पर भगवान प्रसन्न होते है । शिक्षापत्री में भी भगवानने कहा अपनी बुद्धि के अनुसार शास्त्राभ्यास करना चाहिए । इसीलिए अच्छा डाक्टर, इन्जिनियर, एम.बी.ए.एम.सी.ए होना हो तो भगवान की याद करके खूब मेहनत करना ।

दृढ आश्रय का बल

- राजदीप भास्करभाई ब्रहाभट्ट (अहमदाबाद)

एकवार दुनिया का सबसे श्रेष्ठ तत्व चिन्तक टोल स्टोय एक विचार करते

हुए टहल रहा था । वहाँ उसने एक गरीब की टूटी झोपड़ी देखी । उसे हुआ कि आज उस झोपडी में रहने वाले सेमिलूं । भीतर जाकर देखा तो एक १४ वर्ष का बालक बैठा था । उस का फटा पुराना वस्त्र उसकी गरीबी का द्योतक था । लेकिन बालक तेजस्वी था । टोलस्टोय ने पूछा तूं कैसा गरीब है ? कि धनवान ? तुरन्त उसने उत्तर दिया मेरे जैसा मालदार आज की दुनिया में कोई नहीं है । टोलस्टाय ने कहा तेरी टूटी फूटी यह झोपडी, फटा-पुराना कपड़ा, फटा हुआ गद्दा, फिर कैसे कहता है कि मैं मालदार हूँ ? उसने कहा जैसी भी मेरी झोपड़ी है, जैसा भी मेरा कपड़ा है, जैसी भी मेरी गुदडी है, लेकिन आज आप जैसा महान व्यक्ति मेरी इसी झोपड़ी में तों आया न, इससे बढकर और पैसा वाला क्या होगा ? यह सुनकर टोलस्टोय अत्यन्त प्रसन्न हो गया । क्या बात है ? तुम्हें अपनी गरीबाई की अपेक्षा मुझे इतना महत्व दिया है । बोल तुम्हें क्या चाहिए ? ऐसा कहकर उसकी गरीबता को यथार्थस्प सेदूर कर दिया ।

हमें भी इससे ज्ञान लेना है कि हम चाहे जितने कंगाल हो, लेकिन हमें माधुरी मूर्ति में साक्षात् सर्वोपरि श्रीजी महाराज मिले हैं । प्रगट पुस्योत्तम मिले हैं । श्रीहरि के अपर स्वस्प प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री मिले हैं। बाल घनश्याम स्वस्प पू. लालजी महाराजश्री मिले है । ऐसे प.पू. महाराजश्री से दीक्षित संत मिले हैं । तो इससे अधिक सुख क्या चाहिए ? हमने अनंत सुख को प्राप्त किये हैं । शायद इससे अधिक धन कुबेर के पास भी न हो । अब इस लोक-परलोक के शास्वत सुख के अधिकारी को क्या बाकी रहता है ।

पृष्ठ १२ से आगे.....

सत्संग सुरभि :

महाराज ने कहा आपका मित्र अजुभाई मुझे यहाँ ले आये हैं इससे आप प्रसन्न हैं या नहीं । मोहन शेठ गद गद हो गये । महाराज ! हमारे पुत्र केविवाह प्रसंग पर आप आये, बडे संत आये, हरिभक्त आये इससे बडी भाग्य और क्या हो सकती है ।

उसमें से कुछ संत महाराज के पास आकर कहे कि महाराज संध्याकाल हो गया है, संध्या आरती का समय है, अतः हमलोगों को आज्ञा देते तो नियम कर लेते, यह सुनकर शेठ ने कहा, महाराज ! सभी लोग संध्या आरती, चेष्टा, अष्टक इत्यादि का नियम यही करलें तो हमसभी को इसका लाभ मिल जायेगा ।

महाराज शेठ की भावना समझ गये । संतो ने आरती प्रगट करके बडे सिंहासन पर श्रीसहजानंद स्वामी की आरती उतारी । आरती का प्रकाश महाराज के मुख विम्ब की आभा को औरबढा रहा था । सभी लोग उस आनन्द का सुख ले रहे थे । उसी विवाह मंडप में - राम कृष्ण गोविन्द जय जय की धुनि बोली गयी । संतो ने सुमधुर गीत गाये ।

जीवन त्यारे आंगणिये उभा रह्या - श्री मोहनपति श्री परब.....
अक्षरपति आविया,
जीवन निरखी ने नेमां शीतल थया.
तन मन प्रेमानन्द बरी जाय .....

अक्षरपति आविया । जैसे पुस्योत्तम नारायण स्वयं आज वरराजा बनकर आगये हों । ऐसा सुन्दर लग्न मंडपशोभित हो रहा था । बाद में संतो ने वचनामृत किया और चेष्टा बोले ।

इन सभी नियमों में मोहन शेठ, वरराजा, घर के सभी जन, आगुन्तक बाराती, सभी लोग बैठकर इस धन्य घडी का लाभ ले रहे थे ।

श्रीजी महाराज बाद में अजुभाई को कहे, आज आपने बडे पुण्य का कार्यकिया है । इस पिता एवं पुत्र का तीन पीढी तर जायेगा । हमारे धाम के सभी अधिकारी हुए हैं । इनकी परम्परा में सत्संग सदा बना रहेगा । ए सभी सत्संग करके हमारे धांम में जायेंगे । इसका पुण्य अजुभाई आपको मिलेगा ।

पिता पुत्र दोनो को सत्संगी बनाकर श्रीजी महाराज रात्रि में करीब १० बजे नवावास पधारे थे ।

संसार व्यवहार का यह लग्न अवसर आज साक्षात् श्रीहरि की उपस्थिति से एक अलौकिक अवसर बन गया था ।

आचार्यश्री को संदेश

आहलो संदेश आपणा आचार्यश्रीने कहेजो,
हरिभक्तोनां हैयामां रहेजो, संदेशो आचार्य ने कहेशो । ..... आटलो संदेशो
कायना कमलनुं अनपे लागे छए काचुं,
आथी उपदेस अमने देजो, संदेशो सद्गुरुओने कहेशो । ..... आटलो संदेशो
आ देवल ने पडशे ने हंसलो क्या जई समासे,
आथी अक्षरधाम बतलावी देओ, संदेशो आचार्यने कहेशो । ..... आटलो संदेशो
अमने न आपने आपने न अमने,
जन्मोजन्मप्रीत रहेजो, संदेशो आचार्यने कहेशो । ..... आटलो संदेशो
प्रभु ए पदरावेल नरनारायणदेव, नजरोनजर आवे,
दर्शन नित्य अमने देजो, संदेशो आचार्यने कहेशो । ..... आटलो संदेशो
बेऊ कर जोडी आ दासानुदास आप विनवे,
मुक्तिनो राजमार्ग अमने कहेजो, संदेशो आचार्यने कहेशो । ..... आटलो संदेशो

प्रो. महादेव (धोरीयाणी)

?????????????? प्रश्न पेटी ??????????????



साधु अक्तिनंदनंदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ श्री स्वामिनारायण भगवानने अपने स्थान पर किस आचार्य महाराजश्री की स्थापना की, कब की, तथा कहाँ की ?

प्रश्न : २ हरिश्चंद्र राजा सत्य रखने के लिए किसके यहाँ बिके थे ?

प्रश्न : ३ गढडा श्रीजी महाराज की सेवा में १०० रु, संतो की रसोई के लिए २०० रु, कारीगर के पेमेन्ट का ३०० रु., देकर श्रीजी महाराज को प्रसन्न करने वाले भक्त किस गाँव के थे ?

प्रश्न : ४ जेतलपुर में एक वेश्या ने यज्ञ का गेहूँ पीस कर भगवान को प्रसन्न किया और भगवानने उसका कल्याण किया, वह वेश्या कौन थी ?

प्रश्न : ५ लोधीका के दरबारभाई का पुत्र अभयसिंहजी को दुराचार से मुक्त करशे सत्संगी बनाया था। संत्संगी बनाने वाले स्वामी का क्या नाम था ?

प्रश्न : ६ "जाणी पोताना रे, सेवकजन अविनाशी तेमनी पूजा रे, ग्रहण करकें सुखराशी," स्वाभाविक चेष्टा किस पद की कडी है ?

प्रश्न : ७ माता यशोदा रे, मेलो घाट माहरे रे, कहानजीने महीडुं वलोववा काज।"
इस पद के रचयिता का नाम बताइये, इस पद की रचना किस प्रसंग को देखकर की गयी है ?

अगस्त २००६ महीने के प्रश्नपेटी का सच्चा उत्तर तथा उत्तर देने वालों का नाम।

(१) शिक्षापत्री श्लोक नं. ३७ में ऐसा आदेश किया है। (२) १. जव, २. जामुन, ३. वज्र, ४. अंकुश, ५. केतु, ६. पद्म, ७. ऊर्ध्वरेखा, ८. अष्टकोण, ९. स्वस्तिक, १०. कलश, ११. व्योम, १२. अर्धचन्द्र, १३. गोपद, १४. धनुष, १५. त्रिकोण, १६. मीन। (३) कथा सुनना कथा वांचना, भगवान के गुण का कीर्तन करना, पंचामृत से महापूजा करना, भगवान के मंत्रका जप करना स्तोत्रपाठ करना, प्रदक्षिणा करना तथा साष्टांग नमस्कार करना ये आठ विशेष नियम के नाम है। श्लोक ७७, ७८। (४) रामानंद स्वामी को गुरु बनाये। आपके सत्संगी को एक विच्छू का दुःख हो तोवह मुझे एक-एक रोम में करोडो विच्छू का दुःख हो, लेकिन आपके सत्संगी को दुःख न हो, तथा आपके सत्संगी को पत्तर में मांग कर खाना हो तो वह मुझे प्राप्त हो, लेकिन सत्संगी अन्न वस्त्र से दुःखी न हों। (५) ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम, सन्यासाश्रम। (६) १. कुंडा पंथी, २. शक्ति पंथी, ३. शुष्कवेदान्ती, ४. नास्तिक। (७) १. कुटीचक, २. बहूदक, ३. हंस, ४. परमहंस।

१. ठक्कर घनश्यामभाई वी. (साकोदरा)
२. अमरसीभाई वी. विठ्ठलापरा (नवसारी)
३. विष्णुभाई पटेल (सीतापुर)
४. न.ना. युवक मंडळ (सीतापुर)
५. श्री स्वामिनारायण मं. बहनोका (धोळी)
६. लालजी आर. ठक्कर (ओढव)
७. केयूर प्रवीणभाई रादडिया (ओढव)
८. सां. रंजनबा तथा नानी बहन (स्वा.मं. ओढव)
९. मधुबहन अशोकभाई (ओढव)
१०. तागबहन नरेन्द्रकुमार (ऊँझा
११. चिकिताबहन नरेन्द्रकुमार (ऊँझा)
१२. सविताबहन कांतिभाई (ओढव)
१३. माणेकबहन, शिल्पाबहन एम. पटेल (दहेगाम)
१४. साकरबहन नटवरभाई पटेल (नांदोल)
१५. भावसार कोकिलाबहन एच. (अहमदाबाद)
१६. पटेल मार्गेश अजयभाई (नांदोल)
१७. सुभद्राबहन पटेल (नांदोल)
१८. विनोद पी. पटेल (वेहालवाला)
१९. क्रिष्ना, खुशी, अजय, जीगर, वरु (मोगरावाडी)
२०. महंत स्वामी श्री रंगदासजी (सिध्धपुर)
२१. अर्विंदाबहन एन. भावसार (अहमदाबाद)
२२. वीणाबहन आर. भावसार
२३. मृदुलाबहन वी. सोनी (नवा वाडज)
२४. पटेल उर्मिलाबहन, रेखाबेहन (नवावाडज)
२५. पटेल गौरी बहन त्रिभोवनभाई (नवावाडज)
२६. पटेल त्रिभोवनभाई एल. (नवावाडज)
२७. गंगाबहन भक्तिभाई (झुलासन)
२८. हसुबहन ठक्कर (मणीनगर)
२९. सां.यो. मंजूबा, भारतीबा (हवेली)
३०. खीचडीया रिन्कू एन. (बापूनगर)
३१. अमृतलाल मोदी (अमहदाबाद)
३२. पटेल गोरधनभाई शंकरदास (सोजा)
३३. पटेल मेधाबहन कमलेशभाई (कुहा)
३४. पटेल हेतलबहन मयुरकुमार (कुहा)
३५. सां. उषाबहन, शिल्पाबहन (सुरेन्द्रनगर)
३६. वर्षाबहन, शिल्पाबहन (सुरेन्द्रनगर)
३७. सुभद्राबहन रमेशभाई पटेल (क्रनीपुर)
३८. शारदाबहन कांतिभाई पटेल (नांदोल)
३९. पटेल कैलाश बहन विष्णुभाई (नांदोल)
४०. कोकिलाबहन नटवरभाई (मेमनगर)
४१. पटेल प्रवीणभाई एम. (अहमदाबाद, फूलवाला)
५०. हंसाबेन ईश्वरभाई पटेल (सापावाडा)

नोंट : प्रश्नपेटी का उत्तर प्रत्येक महीने की २२ तारीख तक आना अनिवार्य है। इसके बाद के आए हुए उत्तर का नाम लिखा नहीं जायेगा। जिसको सभी लोग जानलें ?

।। भक्तिसुधा ।।

भगवानमे दृढ विश्वास

- सांख्ययोगी कमलाबा कोकिलाबा

परमात्माकी प्रतिज्ञा है कि जो श्रध्धा एंव विश्वास से मेरा चिन्तन करेगा मै उसका योगक्षेमवहन करुँगा । योग का अर्थ है न प्राप्त को प्राप्त करना, क्षेम का अर्थ है- प्राप्त की रक्षा करना । दूसरा अर्थ है कि संसार तथा मोक्ष के लिये मैं भक्त के संपूर्ण उतरदायित्व का वहन करता हूं । मैं अपने भक्त पर कभी दु:ख नही आने देता हूँ ।

स्वामिनारायण भगवान अपना वरदान स्पष्ट करते हुए कहते थे कि मेरे भक्तो को कभी अन्न-वस्त्र की कमी नही होगी, इसका भार मै वहन करता रहूँगां । मेरें भक्त सदा सुखी रहेंगे ।

महाराष्ट्रमे एकनाथजी बहुत बडे संत हो गये है । एकनाथजी तथा उनकी पत्नी दो जन ही घर मे थे फिरभी घर की प्रवृति अधिक थी । गंगाजल भरकरलाना, आने जाने वालो का स्वागत करना, रसोई बनाना, भगवान की सेवा करना, इन्ही क्रियाओ में सभी समय बीत जाता था । भगवान ने विचार किया कि अब एकनाथजी के पास चले उन्हे ख्याल आये कि परमात्मा किस स्वमें आते है । भगवानकी प्रतिज्ञा है कि जो भक्त दृढभावसें मेरी भक्ति करता है उसका सम्पूर्ण व्यवहार देखता हूँ एवं मोक्षभी मै देता हूँ । भगवान एकनाथजी का व्यवहार देखने जाते है ।

एकनाथजी ओसरी में बैठे थे । उनकी पत्नी घरमें रसोई बना रही थी । एकनाथजी के पास आकर एक २०वर्ष का युवानने खडा होकर कहाँ बाबा मुझे नोकरी चाहिए । मेरे परिचयमें एक दो शेठ है उनसे कह दूँगा, कह दूँगा नही बाबा मुझे किसी शेठकी नौकरी नही करनी है, तो कहां करनी है बाबा मुझे आपके यहां नौकरी करनी है । अरे भाई ! हम दो जन ही है मेरे यहा कोई काम नही है, हरीनाम लेते है, तुम्हे खबर है मेरा नाम निशान नही है, कुछ आवक होती नही है, बाबा मुझे पगार नहीं चाहिए खाने को देंगे न ?

एकनाथ कहते है कि भोजन देंगे । तो आपके यहां ही हम नौकरी करेंगे । एकनाथजी प्रभु की इस लीला को समझ नहीं पाये । उन्हे ऐसा लगा कि यह यथार्थत: गरीब है, यह मेरे साथ खायेगा-पीयेगा-भजन करेगा । एक की अपेक्षा दो भले ।

यह वीस वर्ष का युवान एकनाथजी की पत्नी को कहता है कि माताजी आप बैठिये मै भोजन बनाता हूँ मुझे रसोई बनाने आता है । माताजीने इस युवक को सभी दाल- चावल- आटा- कोयला भोजन सम्बन्धी जानकारी दी । बादमें उस युवकने कहा माताजी आप बैठिये मै सब कर लूँगा । एकनाथजी के पास जाकर बैठ गयी और कहने लगी यह नौकर कितना सज्जन है हमें कहा कि आप जाकर बैठिये और भजन कीजिए । एकनाथजी के साथ पत्नी बात कर रही थी, इतने में तो भोजन की थाली सामने लाकर रख दिये कहने लगे आप लोग भोजन करिये इतनी जल्दी हो गया, हां शेठजी हमें जल्दी रसोई बनाने आता है ।

एकनाथजी एंव उनकी पत्नी दोनो ओसरी में बैठकर भोजन कर रहे है, सामने परमात्मा विश्वम्भर भोजन करा रहै है ऐसी जिदंगी किसे मिल सकती है ।

परमात्मा जब उत्तरदायित्व लेते है तो गजब का काम करते है । भोजन बनाने के साथ ही घर का कपडा-बर्तन-पोछा सभी कार्यभार संभाल लिया । इतना ही नही गंगाजी से पानी भी भर लाते । परमात्मा एकनाथजी के घर में सभी काम करते है । पूजामें चंदन घिस देते, फूल ला देते इस प्रकार का काम करने लगे ।

एक दिन परमात्मा का यह कपटपूर्ण सेवा कार्य पकडमें आ गया । एक रात्री एकनाथजी तथा उनकी पत्नी ओसरी में सोए हुए थे, नौरकभी गैलेरी में सोया हुआ था । भगवान का नौकर के स्व में नाम श्री खंडी था । जिसे वहां पंड्या कहकर बुलाया जाता था । उस रात्रिमें एकनाथजी की पत्नी को कोई वस्तु की जरुरत पडी वे लेने गयी, रसोई की खिडकी से बाहर से प्रकाश आ रहा था वही श्री खंडी सो रहे थे, एकनाथजी की पत्नी ने देखा तो वह प्रकाश किसी चिराग का नही था बल्कि अमित तेज जिससे निकल रहा था वे स्वयं चतुर्भुजधारी भगवान ही सो रहे थे, जो काम करने से खुब थके हुए थे और माता लक्ष्मीजी चरण दबा रही थी ।

इस दिव्य अलौकिक दृष्य को देखकर पति को जगाया और कहा कि जल्दी आइये, लेकिन इतने में तो वह दृश्य अदृश्य हो गया । सभी घटना पति को बतादी । दोनो रात्रिमें

ही प्रभु को प्रसन्न करने के लिये प्रार्थना करने लगे । तब प्रभुने प्रसन्न होकर सभी घटना बताई और अभय वरदान देकर अदृश्य हो गये ।

●

भगवान को कैसा जानना

- क्रिष्नाबहन बारे वडिया.

एकबार श्रीजी महाराज उपलेटा गांव से धोराजी जा रहे थे । बीचमें भोज नदी आती है, उसमें स्नान ध्यान करके प्रभु बारैया के घर पधारे, उस समय मलाई बाई हलुआ बना रही थी। महाराज ने कहा क्या कर रही है ? तब बाईने कहा महाराज ! हलुआ बना रही हूँ। महाराज ने कहां हमें भूख लगी है तब सुधीबाई कहती है महाराज हमारे हाथ जूठे है । इसीलिए इन साफ बरतनो में अपने हाथो से दही लो और इस चुल्हे पर हांडी में से भात लो । तब महाराजने थाली में दहीं लिया हांडीमें से भात लिया और खाने लगे। तब तक स्त्रियोने भोजन कर लिया । सुधीबाई निकाला हुआ गाय का दूध देने आई और पूछा महाराज दूध लेंगे महाराजने हां कही । इसीलिए बाई ने दूध निकालते वक्त मलाई को रोकने के लिये अंगुली रखी । महाराजने कहा मलाई आने दीजिये । तब बाई बोली महाराज सुबह हाथ नही घूमेगा क्योंकि उसमें घी है । महाराज बोले ठीक है तो वैसा करो । बाईने दूधका गिलास भर दिया । तब महाराजने दूध और हलुआ अच्छी तरह खाया और खटिया पर बैठे। फिर सुधीबाई को कहा की आप हमें कैसे जानती हो ? तब बाई बोली, महाराज आपतो हमारे गुरु हो । तब महाराज बोले अभी तो हम सस्ते है । किंतु जब बडे बडे राजा-महाराजा और शाहुकारो से सत्संग होगा और हम बडे उत्सव आयोजित करेगें और हजारो साधु संत इसका हिस्सा होंगे तब तो दो किलोमीटर दूर से भी हमारे दर्शन मुश्किल से होगे । इस प्रकार दो घडी बात कर महाराज चले गये ।

●

हरबाई- वालबाई

- तरलाबहन अतुलभाई पोथीवाला

लोज से महाराजने प्रत्येक गांव में पत्र लिखे इसीलिये गुजरात, कच्छ, काठियाबाड से हजारो हरिभक्त प्रबोधिनी एकादशी का उत्सव करने कालवाणी आये ।

एकादशी के दिन सुबह जल्द स्नान कर पूजा कर महाराज सभा में बैठे । बडे संतो के लिये गादी तकिये रखीये थे । वालबाई और हरबाई आयी और सीधे ही गद्दी तकिये पर बैठ गई ।

वालबाई कणबी थी । और शिष्य हरबाई कुभार थी । दोनो आत्मानंद स्वामी की शिष्या थी । बहुतज्ञानी किंतु अभिमानी थी । फिरभी रामानंद स्वामी ने संभाल रखा था ।

महाराजकी सभा मे पुरुष और साधु के बीच गद्दी तकिये पर बाई आ कर बैठी, इसीलिये संत उठ कर चले गये। महाराजने विवेकपूर्वक दोनो बाइयों को कहां आप इसप्रकार क्यो वर्तन कर रही हो ? त्यागी स्त्रीका वेश धारण करके पुरुष प्रंसग क्यो रखती हो ? संतो को उपवास करना पडे ऐसा क्यो करती हो ? इसीलिये सत्संगमे रहना हो तो सत्संग के नियमानुसार व्यवहार करो, पुरुषो को उपदेश मत करो ।

यह सुनकर दोनो महिलाये कहने लगी कि हमें जीवन मुक्ता है । पुरुष प्रंसग से हमे कुछ होनेवाला नही है । हमारी दृष्टी में स्त्री-पुरुषका कोई भेद नही है । सभी हार मास के प्राणी है । हम तो बाल्यावस्था से ही ब्रह्मचारी है। युवावस्था में भी हमें काम नही प्राप्त हुआ । अब वृद्धावस्था में क्या होगा ? इसके अलावा रामान्दस्वामी, आत्मानंदस्वामी ने कभी नही रोका तो आजकाल के आप रोकनेवाले कौन है ? इसीलिये आप की बात हम नही मानते । अधिक कहेगे तो हम अपने सभी शिष्यो को साथ लेकर चले जायेगे और अलग पंथ बना देंगे ।

त्यागी साधु तथा त्यागी महिलाओ के धर्मकी बात करते हुए महाराज कहते है कि,

जैसे पुरुष को नारी का रोग बैसे हि स्त्रीको पुरुष का रोग होता है

घृत अग्नि समान, एवां करवु नही अभिमान

लोधी होय जो इन्द्रियो जीती, तोये सौने शिखाववानी सुगीती ·

मोटा मुक्त रहे तेथी, एवी रीत चलाववा जरुर ।

महाराजने बहुत उपदेश दिया । स्त्री -पुरुष का प्रंसग कितना पतित करता है, इसके अनेको उदाहरण शास्त्रो में से दिये । फिरभी नही मानी । इससे क्या निर्णय लिया जाय इस पर चर्चा करने के लिये महाराज एंव मुक्तानंदस्वामी एकांत में बैठे । मुक्तानंद स्वामी ने कहा महाराज ये हरबाई, वालबाई रधुनाथदास तीनो बहुत अभिमानी है । रामान्द स्वामी के समय में भी ये दोनो महिलाये ऐसा ही वर्तन करती थी । लेकिन रामानन्दस्वामी दु:ख्री मन से चला लेते थे । अब चलायेगे तो कितने भोले मुमुक्षुओ को भरमा देंगी । मोक्ष के मार्ग से

गिरा देगी । इसीलिये एकबार और समझा कर देखलेते है । फिरभी नही मानेगी तो विमुख कर देगे ।

इसीलिये महाराजने सभा में आकर पुनःशांति से समझाया, फिरभी दोनो हठकर बैठी थी । वहां से उठी ही नही।

अंतमें सभामे महाराज धर्मधुरंधर की छटा में बोले हे हरबाई ! हे वालबाई ! हमारे अथग उपदेश के बाद भी जैसा तैसा वर्तन करती है इसीलिये हम बर्दास्त नही कर सकते है। सत्संग- सम्प्रदाय आप दोनो को विमुख करता है ।

महाराजके इस प्रकार निडर वचन सुनकर दोनो साध्वी ठिठुक गई । दोनो रिसियाकर सभा में से निकल गयी । साथ में उनकी शिष्या यें भी निकल गई । उन्होंने त्रंबा गाव में जाकर अलग पंथ बनाया । परंतु अधिक समय तक यह नही चला । इस प्रकार यह अधर्म सर्ग मूल से उजड गया और हमारे संप्रदाय को शुद्ध पंथ की उपाधि मिली ।

इसमे भी जिसे श्रीहरि की चाहना नहो वह कितने दिन टिक शकता है ? स्त्री-पुरुष की मर्यादा ही अपने संप्रदाय का प्रमुख लक्षण है । इससे अपना संप्रदाय उज्वल है, शुद्ध है, परिमार्जित है ।

माला का महत्व

- भगवतीबहन कांतिलाल सोनी (पाटण)

श्री हरि की दिव्य चेष्टा को प्रेरणा स्त्रोत माला है श्री हरिने अपना मोक्ष लेने से पहले मोक्ष का साधन देकर गये है । जपमाला के माध्यम से हरि कहते है कि आप किसी भी परिस्थिति में हो उसमे मेरा स्मरण करे । समय आने पर में आपकी मदद करुंगा । श्री हरि हाथ में माला लेकर सभा मे बिराजित होकर मोक्ष की अनोखी प्रेरणा दे रहे थे । माला की प्रणालिका हिंदू धर्म के कई धर्मो में देखने मिलता है । सभी की प्रकृति अलग अलग है । रथ के पहिये की नाभी से जिस तरह आसय संयुक्त मिले हुए होते है उसी तरह शरीर की अंतर्वाहिनी नाडीयाँ हृदय से संयुक्त होती है । हृदय का अर्थ होता है परमात्मा का निवासस्थान । उसे परमात्मा को पाने के लिये आर्षद्रष्ट्रा ऋषिमुनिओ ने माला उपकरणके रुप में प्रदान की है । श्रीहरि हाथ में माला लेकर घुमाते है । कारण जीवन को स्वस्थ बनाने की यह तीन वस्तु है । (१) माला को स्थान दो (२) तालाको स्थान दो (३) पाठशाला को स्थान दो । परंतु नकल और देखा-देखी को स्थान न दो । श्रीहरि की चेष्टा है । मनुष्य की बात ही अलग है । मनुष्य खाली बैठा होतो या तो कंकर उछालता है या तो नकल करता है । एक दिव्य सूत्र है "करे जप तो घटे लप" जप करने से जन्मकुंडली के ग्रह भी सुधरते है ।

१. एक करोड जप करने से तन सुधरता है । अर्थात आरोग्य प्राप्त होता है ।
२. दो करोड जप करने से दिव्य सुख मिलता है । अर्थात धन की प्राप्ति होती है ।
३. तीन करोड जप करने से पराक्रम सिद्ध होता है । यश, कीर्ति मिलती है ।
४. चार करोड जप करने से सुख प्राप्ति होती है ।
५. पांच करोड जप करने से ज्ञान प्राप्त होता है ।
६. छ करोड जप करने से अंतःशत्रुओ का विनाश होता है।
७. सात करोड जप करने से स्त्रीको अंखड सौभाग्य प्रदान होता है ।
८. आठ करोड जप करने से मरण सुधरता है । अपमृत्यु रुक जाती है । मृत्यु का स्थान सुधरता है ।
९. नौ करोड जप करने से इष्टदेव के दर्शन होते है । स्वरुप का साक्षातकार होता है ।
१०. दस, ग्यारह और बारह करोड जप करने से संचित प्रारब्ध क्रिपमण कर्मो का नाश होता है।
११. तेरह करोड जप करने से भगवान के साक्षात दर्शन होते है ।

श्री हरि अपने हाथो में तुलसी की माला रखकर घुमाते रहते है । मालाओ के अनेक प्रकार है । तुलसी की, सुखड की, कमलबीज की, स्फटिक की, रुद्राक्षकी, कुस की, पारद की । इन सभी में तुलसी की माला श्रेष्ठ है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर इडर केपाटोत्सव के संदर्भ में

श्री स्वामिनारायण मंदिर इडर का वार्षिक पाटोत्सव आगामी वर्ष ज्येष्ठ शुक्ल-१३ के दिन मनाया जायेगा । यह पाटोत्सव प्रति वर्ष इसी समय सम्पन्न होगा। जिसे सभी हरिभक्त नोंट करलें ।

वाली (राजस्थान)

श्री स्वामिनारायण का बदला हुआ फोन नं. (02969) 281138

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का U.K., U.S.A. का धर्मप्रवास

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने विदेश में I.S.S.O. के विदेश का सत्संगका विकास के लिए जब से स्थापना की है तब से आज तक विकास के मार्ग पर उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। जिस में U.S.A. तथा U.K. की तरह आस्ट्रेलिया, न्युझीलेन्ड तथा स्वीडन में भी भव्य मंदिरो की स्थापना हुई उसी समय से प्रत्येक चेप्टरो में सत्संग मंडली भी खूब कार्यरत है। श्री नरनारायणदेव गद्दी की इस संस्था का सर्व प्रथम न्युजर्सी के विहोकन सीटी में सुन्दर हरि मंदिर का निर्माण हुआ। उसके बाद अमेरिका में सतत मंदिर निर्माण की परम्परा चलती रही। आज दश-दश मंदिरो की धर्म ध्वजा अमेरिका के बड़े बड़े शहरो में लहरा रही है। असंख्य हरिभक्त इस मंदिर में आकर भक्ति-आराधना का लाभ ले रहे हैं। इन भक्तों के मनोरथ को पूर्ण करने के लिए श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री विद्वान संतो को साथ लेकर यदा कदा विदेश पधारते रहते हैं। १२-७-०६ ता. से प्रारम्भ धर्म प्रवास की एक झलक यहाँ प्रदर्शित की जा रही है।

- फ्लोरिडा के लेकलेन्ड मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्ण महाराज, श्री नरनारायणदेव, श्री लक्ष्मीनारायणदेव आदि भगवान के स्वरूपों का प्रथम वार्षिकोत्सव खूब उत्साह के साथ धूमधाम मनाया गया। जिस में समूह महापूजा, भागवत पारायण, सत्संग सभा तथा पूज्य महाराजश्री भावुक भक्तों के घर पदार्पण किये जिससे सभी भक्तजन अत्यानन्दित हुए थे। सात दिन तक ऐसा वातावरण बन गया था कि जैसे स्वदेश अपनी जन्मभूमि भारत में आ गये हों।
- टेक्सास के ह्युस्टन शहर में भव्य तथा विशाल मंदिर में विराजमान भगवान के वार्षिकोत्सव के साथ ही नवनिर्मित शिखरों का उत्सव, विष्णुयाग, श्रीमद् सत्संगिभूषण की कथा का सुंदर आयोजन किया गया था। सात दिन तक हरिभक्तों को कथावार्ता तथा पूज्य आचार्य महाराजश्री के मंगल दर्शन एवं आशीर्वाद का अलौकिक लाभ मिला था।
- U.K. लंदन के गेटविक के सुन्दर रमणीय शांत विस्तार में I.S.S.O. द्वारा जमीन प्राप्त करके नूतन भव्य महामंदिर का निर्माण कार्य पूर्ण होने से प.पू. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ U.K. पधारे तथा अपने वरद् हाथों से भगवान के दिव्य स्वरूप की प्राण प्रतिष्ठा की जिसका हजारों भक्तोंने लाभ लिया। U.K. में I.S.S.O. श्री नरनारायणदेव के संस्था का यह चौथा मंदिर अति भव्य एवं विशाल जमीन में बनाया गया है।
- ज्योर्जी के एटलान्टा तथा वाबर में प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा संतो का पदार्पण करवाया गया था। जहाँ पर उस जगह की पसन्दगी की गयी थी। पू. महाराजश्री U.K. से सीधे यहां पधारकर पांच दिनतक सत्संगप्रचार करते रहे। यहाँ पर भावुक भक्तों के घर पदार्पण करके उनके मनोरथ को पूर्ण किये थे।
- एडीसन कोलोनिया के सुंदर एवं विशाल अपने मंदिर में विराजमान भगवान श्री नरनारायणदेव तथा अन्य देवों के वार्षिकोत्सव को अति भव्यता से हरिभक्तों के विशाल समुदाय के साथ मनाया गया था।
- डिट्रोईट अपने मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव के दूसरे वार्षिकोत्सव को प.पू. आचार्य महाराजश्री ने अपने हाथों से भक्तिमय होकर सम्पन्न किये थे। समूह महापूजा तथा निष्कुलानंद स्वामी विरचित धिरजाख्यान की कथा को बडी श्रद्धा के साथ भक्तों ने श्रवण किया था.
- ओहायो के कवियलेन्ड में प.पू. आचार्य महाराजश्री ने पदार्पण करके हरिभक्तों के सुख के लिए सुन्दर मंदिर का निर्माण हो इस हेतु से एक विशाल चर्च को पसन्द किया तथा उसे मंदिर बनाने के लिए खरीद लिया गया। ठाकुरजी के साथ पूज्य आचार्य महाराजश्री उस स्थल पर पदार्पण करके स्थल को अति पवित्र बनाया और आज्ञा किये कि इसमें फेरफार करके मोक्षदाता श्रीहरि की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा अति शीघ्र कर देनी चाहिए। इसके बाद यहाँ के संतो के साथ पूज्य आचार्य महाराजश्री साथ बोस्टन के नूतन महामंदिर की प्राण प्रतिष्ठा करने के लिए पधारे थे।
- बोस्टन - अमेरिका I.S.S.O. में संचालित श्री नरनारायणदेव के मंदिर की भव्य परंपरा में विहोकन के बाद सुन्दर मंदिर का निर्माण बोस्टन में हुआ। जिसे अढारह वर्ष बीत गये। उस समय के सत्संग की पकड़ इतनी मजबूत होती गयी कि इतने थोडे समय में मंदिर बनाया गया जो आज छोटा पड़ने लगा है। परिणाम स्वरूप पूज्य महाराजश्री की आज्ञा मिलते ही विशाल शिखरी मंदिर की जगह उत्तम स्थान पर मिल गयी। पूज्य बडे महाराजश्री का पदार्पण कराकर उसके निर्माणार्थ हरिभक्तों को यजमान बनाने के लिए बोली बोली गयी। देखते-देखते प्रत्येक मूर्ति के यजमान बन गये। प्रत्येक कार्यक्रम के भी यजमान तैयार हो गये। समये अधिक मात्रा में आये। प्लानिंग के अनुसार कार्यारम्भ कर दिया गया। थोडे समय में शुभ मुहूर्त भी आगया। (२० अगस्त २००६) इस प्रसंग के उपलक्ष्य में श्री मद् भागवत सप्ताह का आयोजन हुआ। पूज्य आचार्य महाराजश्री तथा संत भी विचरण करते हुए यहाँ पहुंच आये। अति उत्साह के साथ उत्सव का आरम्भ हुआ। भव्य शोभायात्रा अमेरिका के महत्व के शहर में निकाली गयी। जिसमें आबाल नरनारी करीब तीन हजार से अधिक लोग भाग लिये। स्थानिक अमेरिकन प्रजा को यह गति कुछ नयी सी लगी। प्राण प्रतिष्ठा के दिन प्रातः काल अहमदाबाद में रंग महोल के घनश्याम महाराज के स्वरूप जैसे सुन्दर स्वरूप वाले घनश्याम महाराज की मूर्ति को पूज्य आचार्य महाराजश्री ने वेदविधि से षोडशोपचार पूजन के साथ प्राण प्रतिष्ठा करके आरती उतारी, उस समय साक्षात् परमात्मा प्रगट हो गये हो ऐसी अनुभूति दर्शन करने वाले को हुई थी। इसके बाद विशाल सभा में अनेक प्रसंगो की बोली बोली गयी थी। सभी भक्त जन अपने सामर्थ्यानुसार बोली बोले थे। सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज के साथ, श्री नरनारायणदेव, श्री लक्ष्मीनारायण देव, श्री राधाकृष्णदेव, श्री धर्मभक्ति तथा अन्य भगवत् स्वरुपों की प्रतिष्ठा के बाद भक्तों के मन को दर्शन का अलौकिक आनन्द मिल रहा था।

- महंत शा. स्वा. निर्गुणदासजी श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद

सत्संग समाचार

गुजरात के बाढपीडितों को श्री नरनारायणदेव देश केमंदिर द्वारा फूड पैकेट का वितरण

गुजरात में सूरत शहर और उसके बाद मध्य गुजरात और अहमदाबादजिले के धोलका तालुका के विस्तारो में लगातार दोसे तीनबार अधिक वर्षा के कारण डेम ओवरफ्लो हो जाने की वजह से अचानक पानी छोडने की वजह से अनेक गाँव में ९ से १० फूट पानी भर गया था। काफी लोग पानी में फस गए थे। यह समाचार प.पू. बडे महाराजश्री तथा अमेरिका पधारे हुं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को मिलते ही उन्हों ने हमारे सभी बडे मंदिरो के महंत स्वामी को आज्ञा दी की अपने मंदिरो की तरफ से बाढपीडितों को तात्कालिक सुविधाए प्रदान की जाए। इस आदेश के अनुसार अहमदाबाद कालुपुर मंदिर, जेतलपुर मंदिर, नारणपुरा मंदिर, नारणघाट मंदिर, कांकरिया मंदिर, जीवराजपार्क मंदिर, बापुनगर एप्रोच मंदिर, धोलका मंदिर, बोपल आदि अनेक छोटे बडे श्री नरनारायणदेव देश के मंदिरो में लगभग २००००० दो लाख से ज्यादा सुखडी, पूरडी, सेव, आदि के पेकेट सूरत शहर, खेडा-नडीयाद, आणंद-तारापुर विस्तार और धोलका तालुका के गाँव मेंफूड पैकेट का वितरण किया गया था।

प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने बाढपीडितो का संपर्क करके उनके समाचार लिए थे। सभी बडे मंदिरो के महंत स्वामी और हरिभक्तों को प.पू. बडे महाराजश्री ने आज्ञा की थी की बाढपीडीतों की किसी भी समय सेवा सहत की जाए। *- अनिल पटेल*

श्रावण महीने में अहमदाबाद मंदिर में होमात्मक महापूजा संपन्न हुई।

सर्वोपरि श्रीहरि को अति प्रिय है ऐसी होमात्मक महापूजा सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में और संप्रदाय के भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से ता. २०-८-२००६ के रविवार को विद्वान पंडितो के सुमधुर ज्ञान के साथ विधिसर संपन्न हुई। जिसके मुख्य यजमान पद का लाभ प.भ. सुरेन्द्रभाई विशाला वाले को मिला था। बाकी सभी श्रद्धालु भक्तोंने समूह महापूजा में लाभ लेकर जीवन धन्य बनाया। कोठारी स्वामी धर्मप्रकाशदासजी और संतमंडलने सुंदर व्यवस्था का आयोजन किया था।

- शा. सत्यप्रकाशदास स्वामी

मथुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर

अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रावण महीने में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री राधाकृष्ण देव को विविध झूले में झुलाकर श्रद्धालुओं को दर्शन करवाए। महंत स्वामी और पूजारी सर्वेश्वरदास ने हरिभक्तों को प्रेरणा देकर झूलोत्सव की सेवा करवाई थी।

ता. १२-८-०६ से ता. १८-८-०६ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण प.भ. सुदर्शनभाई खत्री परिवार की तरफ से की गई थी। पारायण में आने वाले सभी लीला प्रसंग को धूमधाम से मनाया गया।

- कोठारी नरेन्द्र भगत

दिल्ली मंदिर में पाटोत्सव प.पू. बडे महाराजश्री के वरद् हाथों से किया गया

न्यु दील्ली के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ६-८-०६ के दिन प्रातः ७-०० बजे सर्वोपरि बाल स्वरूप श्री घनश्याम महाराज का षोडशोपचार महाभिषेक पाटोत्सव श्रीहरि के अपर स्वरूप प.पू.ध.धु. बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से वेदविधिपूर्वक धूमधाम से संपन्न हुआ। स.गु. महंत स्वामी देवप्रसाददासजी गुरु स्वामी जगतप्रकाशदासजी कोलोनीया यु.एस.ए. मंदिर के महंतश्री, की प्रेरणा से प.भ. जनकभाई टांक तथा उनके चि. श्री शरदभाई और श्री प्रकाशभाई यजमान पद का दिव्य लाभ लिया था।

प्रासंगिक सभा में सभा संचालन करते हुए महंत शास्त्री स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजी और उनेक गुरुस.गु. महंत स्वामी जगतप्रकाशदासजी, जयपुर के महंत शा. देवस्वरूप स्वामी आदि संत-हरिभक्तों ने देव, आचार्य और धर्मकुल दीक्षित संत का माहात्म्य सुंदरता से वर्णित किया। अंत में यजमान परिवार को और सभी संत हरिभक्तों को प.पू. बडे महाराजश्री ने दिव्य आशीर्वाद प्रदान किए।

सेवा में मूली से स.गु. जयप्रकाश स्वामी (पूर्व पूजारी श्री राधाकृष्णदेव, साधु माधवप्रसाद और पार्षद भूपत भगत ने सुंदर सेवाकरके प.पू. महाराजश्री की प्रसन्नता प्राप्त की थी। *- पार्षद भरत भगत मूलीधाम*

श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा

भव्य तीन शिखर के निर्माणाधीन श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशेलन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वादसे यहाँ के महंत स्वामी नारायणप्रसाददासजी, शास्त्री उत्तम स्वामी और साधु हरिवल्लभदासजी की प्रेरणा से ता. १२-७-०६ से ता. ११-८-०६ तक झूला बनाकर ठाकुरजी को विविध प्रकार से झुलाया था। हरिभक्तों को यजमान बनाकर दर्शन का दिव्य लाभ दिया था।

- बाबुभाई एन. चौधरी

उनावा मंदिर

श्री स्वामिनारायणमंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा शिकागो मंदिर के महंत शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी की प्रेरणा से महंत स्वामी हरिवल्लभदासजी ने हरिभक्तो के साथ - सहकार से श्री राधाकृष्णदेव केभिन्न प्रकार के झुलोत्सव का आयोजन किया था। श्रावण महीने में शा. सुव्रत स्वरूपदास और शा. व्रजवल्लभदास ने श्री सत्संगिभूषण ग्रंथ की कथा करके हरिभक्तो को सुंदर लाभ दिया। *- महेन्द्र भगत*

जयपुर मंदिर में पाटोत्सव मनाया गया

राजस्थान की गुलाबी नगरी जयपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में सर्वोपरि श्रीहरि की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा पू. पी.पी. स्वामी और शा.स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. अ.नि. शा.स्वामी कृष्णजीवनदासजी (मेतपुरवाले) और उनके शिष्य शा. बालकृष्णदासजी गोविंद स्वामी आदि संतो की प्रेरणा से यहाँ मंदिर का ३७ वाँ वार्षिक उत्सव ता. १३-८-०६ के रविवार को अ.नि.प.भ. बापुलाल रणछोडदास पटेल तथा अ.नि. जडालय बहन बाबुलाल पटेल तथा चि. हरिकृष्ण आदि सभी परिवार की तरफ से प्रातः ७-०० बजे ठाकुरजी का महाभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री केशुभ वरद् हाथों से श्रीराजुभाई शुक्ल के गोरपद पर वेदविधि से धूमधाम से संपन्न हुआ। समूह

महापूजा में यजमान परिवार के साथ कई हरिभक्तों को प.पू. महाराजश्री के सानिध्य का लाभ मिला था।

प्रासंगिक सभामें यजमान प.भ. मनुभाई पटेल के परिवार ने प.पू. महाराजश्री का स्वागत पूजन आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किया। उसके बाद महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजीने मेतपुर के गोविंद स्वामीने प.पू. महाराजश्री का फूलहार से स्वागत पूजन करके आशीर्वाद प्राप्त किया। उसके बाद सभी संतो का यजमान परिवार ने पूजन किया था। जयपुर के और बाहर गाँव से पधारे हुए हरिभक्तों ने प.पू. महाराजश्री का पूजनअर्चन किया था।

धामोधाम से पधारे हुए संत हरिभक्तों ने देव-आचार्यश्री के महिमा के साथ प.भ. मनुभाई की सेवा की भी प्रशंसा की। वडताल से प.पू. आचार्य महाराजश्री का आशीर्वाद पत्र सभा में पढा गया था। बालधुन मंडल के बच्चों का प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से प्रोत्साहन इनाम तथा दिव्य आशीर्वाद प्राप्त हुए।

प.भ. ठाकुरभाई, मनुभाई, पूंजाभाई, नवीनबाई, सुरेशभाई, रमेशभाई, और शीयाराम शर्माने सुंदर सेवा की।

अंत में प.पू. बडे महाराजश्री ने यजमान परिवार और समस्त सभा को दिव्य आशीर्वाद प्रदान किए। प.पू. बडे महाराजश्री के दिव्य संकल्प श्री नरनारायणदेव म्युझियम में पू. शा.स्वामी आत्मप्रकासदासजी की प्रेरणा से अ.नि.शा.स्वामी कृष्णजीवनदासजी की दिव्य स्मृति में उनके शिष्य मंडल मुंबई, जयपुर और मेतपुर सत्संग समाज तरफ से समये ५,००,०००/- (पांच लाख) की सेवा की घोषणा की थी। अंत में आभारविधि प.भ. मनुभाई ने की थी।

इस सभा में आमंत्रित मेहमान तथा प्रतिष्ठित हरिभक्तों ने प.भ. मनुभाई का शाल ओढाकर बहुमान किया था।

इस प्रसंग पर मुंबई, मेतपुर, खंभात, अहमदाबाद, कोल्हापुर, हेद्राबाद, सुरत, वासणा और जयपुर में गहनो में अग्रसर हरिभक्त बडी संख्या में लाभ लेकर धन्य हो गए। - *महंत साधु देवस्वरूपदास, जयपुर*

गांधीनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर

सेक्टर-२३

गांधीनगर सेक्टर-२३ अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से झूलोत्सव महोत्सव और श्रावण महीने के ज्ञान सत्र को धूमधाम से मनाया गया। विविध प्रकार से भव्य झूलोत्सव में ठाकुरजी के दर्शन भी अद्भूत थे।

पू. शास्त्री स्वामी हरिकेशवदासजी के मार्गदर्शन के अनुसार पूर्ण श्रावण महीने में भागवत दशम स्कंधकी कथा शास्त्री हरिप्रियदासजी ने भावमय शैली में की थी। श्रावण सुद-११ को समूह महापूजा और जन्माष्टमी को बच्चों, युवानों के सत्संग के उपलक्ष्य में प्रेरणादायी कार्यक्रमो को देखकर सभी बहुत प्रसन्न हुए थे। ता. २३-८-०६ की अमावस्या की शाम को सत्र की समाप्ति हुई थी। प.भ. पशाभाई पटेलने (पोस्ट मास्टर)। आरती पूजन का लाभ लिया।

- *नारायण बी. जानी*

मेघाणीनगर में बाल सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा-प्रेरणा से अंतिम दश वर्ष से अपनेमंदिर में बाल सभा होती है। ता. १३-८-०६ के रविवार को फर्स्ट क्लास उत्तीर्ण होने वाले को इनाम प्रदान किया गया था। इस कारण बच्चो मे उत्साह देखने में मिला।

- *संचालक रणछोडभाई देवाणी*

बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर

बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से सत्संग प्रवृत्ति अति सुंदर होती है।

श्रावण महीने में भगवान के विभिन्न प्रकार के झूलोत्सव के दर्शन करवाए गए। उसमें थर्मोकोल के झुलोत्सव दर्शन का आकर्षण सभी को आतुर बनाता था। ता. १२-८-०६ से ता. १८-८-०६ तक शास्त्री कृष्णस्वरूपदासजी (जयदेवपुरा) के वक्तापद पर श्रीमद् भागवत सप्ताह रात्री पारायण का लाभ हरिभक्तों के अति आग्रह से सभीको प्रदान किया गया।

प.पू.ध.धु आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प.भ. रतिभाई खिमजीभाई पटेल (स्कीम कमिटी सभ्यश्री) के मार्गदर्शन में सूरत के बाढपीडितो के लिए २५०० फुड पेकेट २५०० पारले बिस्कुट के पेकेट राहत केम्प में भेजे गए.

यहाँ पर हर रविवार शाम ५-३० से ७-३० तक सत्संग सभा में विद्वान संतगण अमृतवाणी का लाभ देते हैं।

हर एकादशी के दोपहर ३ से ५ महिला सत्संग सभा कीर्तन का कार्यक्रम भी श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा भिन्न-भिन्न हरिभक्तों के यहाँ रात्रि में ९ से १०-३० तक रखा जांता है। बोपल धुमा-आंबली विस्तार के हरिबक्तों को मंदिर में दर्शन का लाभ लेने के लिए अनुरोध है। - *अमृतभाई टी. पटेल*

नरोडा (आदीश्वरनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से हरिभक्त सत्संग लक्षी प्रवृत्ति के साथ सर्वोपरि श्रीजी महाराजश्री की उपासना करते हैं। इस विस्तार में कक्षा १०, १२, में फर्स्ट क्लास पास होने वालो के लिए इनाम प्रदान कार्यक्रम रखा गया है। कुल-३० विद्यार्थीओं को राणीप-मोखासणा के श्री भरतभाई नटुभाई पटेल की तरफ से इनाम प्रदान किया गया।

प.भ. ठाकरसीभाई ओघडबाई चावडा (बकोल) और अन्य हरिभक्त भी इस प्रसंग पर प्रेरणास्रम बने थे।

- *बेचरभाई परमार, टींबा*

घाटलोडीया के नव निर्मित मंदिर में सत्संग सभा

श्री नरनारायणदेव लाबा के नवनिर्मित अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से इस विस्तार के हरिभक्त गण यहाँ नियमित कथा-वार्ता-नित्य नियम और ठाकोरजी की दोनो समय आरती आदि धार्मिक प्रवृत्ति करते है।

जन्माष्टमी की रात्रि कों श्री कृष्ण जन्मोत्सव के प्रसंग पर सेंकडो हरिभक्तो ने जन्मोत्सव के दर्शन का लाभ लिया था।

घाटलोडीया, चांदलोडीया विस्तार में बसने वाले हरिभक्तों को इस मंदिर में दर्शन-कथावार्ता का लाभ लेने का खास अनुरोध है।

वाली (राजस्थान)

श्री स्वामिनारायण मंदिर

वाली श्री स्वामिनारारणय मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अ.नि.स.गु. स्वामी निर्मलदासजी के स्मरण के लिए १२ घंटे की श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून का आयोजन किया गया। जिस में जलात्रा, दांतीया, थोबाउ, सारीसाणा, जोधावा और गोलीया आदि गाँव के हरिभक्तों ने लाभ लिया था। - *महंत स्वामी, वाली*

वडु श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा

से यहाँ मंदिर में पवित्र श्रावण महिने में ता. १४-८-०६ से २०-८-०६ तक श्रीमद् भागवत दशम स्कंध पारायण का आयोजन किया गया । वक्तापद पर साधु विश्वप्रकाशदास (वडनगर) रहें थे । जिसके यजमान अ.नि. पटेल घनश्यामभाई माधवदास का परिवार था ।

अंतिम दिन पर गाँव के सभी हरिभक्तों को भोजन प्रसाद प्रदान किया गया । कथा में हरिभक्तों ने बडी संख्या में लाभ लिया ।

- शैलेषभाई टी. पटेल

दहेगाममंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प.भ. कोठारी अरविंदभाई पटेल आदि हरिभक्तों ने ठाकुरजी के समक्ष भिन्न प्रकार के झूलोत्सव करके उन्हें झुलाया । जन्माष्टमी उत्सव भी धूमधाम से मनाया गया ।

- स्टो.कि. हर्षद काका पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर माधवगठ (प्रांतिज)

प्रांतिज देश के माधवगढ गाँव के श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रावण महीने में हरिभक्तों ने ठाकुरजी के विविध झूलोत्सव का दर्शन करवाए । *- भलाभाई पटेल*

नांदोल

यहाँ श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने और समस्त धर्मकुल की कृपा आशीर्वाद से कोठारी विष्णुभाई तथा भीखाभाई ने सभी हरिभक्तो के साथ सहकार से भगवान का भिन्न- भिन्न झूलोत्सव करके भगवान को झुलाया ।

- नांदोल सत्संग मंडळ

दोलाराणा वासणा

श्रीहरि के प्रसादी के इस गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. महाराजश्री की आज्ञा से श्रावण महीने में कथा का आयोजन किया गया। वडनगर से शास्त्री अभिषेकप्रसाददास ने श्रीमद् सत्संगिजीवन शास्त्र का पान करवाया । जन्माष्टमी के कृष्ण जन्मोत्सव को भी धूमधाम से मनाया गया । बड़ी संख्या में हरिक्तों ने लाभ लिया ।

धमासणा श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँश्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रावण महीने में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से शास्त्री स्वामी छपैयाप्रसाददासने पूर्ण महीने में श्रीमद् सत्संगिभूषण शास्त्र की कथा सुनाई । श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने ठाकुरजी के भिन्न झूलोत्सव का दर्शन प्रदान करके ठाकुरजी को झुलाया । जन्माष्टमी को बच्चो ने सुंदर रास खेलकर सभी को मुग्ध कर दिया । श्री कृष्ण जन्मोत्सव की आरती श्री नंदुभाई नारणभाई हाथीभाई ने उतारी । कथा की पूर्णाहुति की आरती हरिभक्तों ने समूह में उतारी थी । इस प्रसंग पर हार्दिक भगत और कोठारी पोपटभाईने अच्छी सेवा की थी ।

- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर में जन्माष्टमी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया

स.गु. श्री ब्रह्मानंद स्वामी की कर्मभूमि और निधन भूमि मूली धाम में श्रावण वद-८ जन्माष्टमी के उत्सव के प्रसंग पर सर्वोपरि श्रीहरि के अपर स्वरूप प.पू.ध.धु. आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के साथ बाल स्वरूप घनश्याम महाराज स्वरूप प.पू. लालजी महाराजश्री झालावाड के धर्मकुल प्रेमी हरिभक्तों को अलौकिक दर्शन प्रदान करने हेतु पधारे ।

स.गु. ब्रह्मानंद सभा मंडप में विशाल सभा में प.पू. महाराजश्रीने अंतिम एक महिने से हो रही श्रीमद् भागवत दशम स्कंध कथा की पूर्णाहुति अपने वरद् हाथों से की । जिसका कथामृत पान मूली के युवा महंत शास्त्री स्वामी ज्ञानवल्लभदासजीने अपनी शैली में भावुक भक्तों को करवाया था ।

प्रासंगिक सभा में प.पू. बडे महाराजश्री ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि मूली हमें बहुत प्यारा है । क्यों कि ब्रह्मानंद स्वामी को धर्मकुल बहुत प्यारा था । वर्तमान आचार्य महाराजश्री इस समय अमेरिका में है । परंतु उनका मन मूली में ही हैं । और कह रहे होंगे की मेरे हरिभक्त अभी उत्सव के दर्शन केलिए आतुर हो रहे होंगे । ऐसा महंत स्वामीने कहा तो हरिभक्तों ने अति प्रसन्नता से तालिओं का नाद किया ।

रात्री में सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराजके सन्मुख हरिभक्तों ने रास गान के साथ कीर्तन, भक्ति की थी । रात्रि १२-०० बजे प.पू. बडे महाराजश्रीने श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की आरती की तब देवों को भी दुर्लभ ऐसे महा अलौकिक दर्शन का लाभ संत-हरिभक्तो को मिला । *- नवलदान गढवी*

धांगध्रा नरसीपरा मंदिर

यहाँ नरसीपरा श्री स्वामिनारायण मदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से बाल स्वरूप घनश्याम महाराज का ६ठ्ठा पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंग पर कथा-वार्ता और धून हरिभक्तोने समूह में की । साधु ईश्वरचरणदास और कोठारी उत्तमप्रियदासने उत्तम सेवा की थी ।

- प्रति. अनिलभाईदुधरेजीया

लखवतर श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से यहाँ श्री स्वामिनारायणमंदिर में शास्त्री रामकृष्णदासजी और संतमंडल ने समझाया । भजन प्रकाश स्वामी ने नंदसंतो के कीर्तन सुंदर राग में गा कर सभीकोप्रसन्न किया ।

- पटेल अमृतलाल एच.

भचाउ श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्रीहरि के प्रसादी के कच्छ के भचाउ के सामने नवनिर्मित श्री स्वामिनारायणमंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. २७-७-०६ से ११-८-०६ तक भुज मंदिर के संतो के मार्गदर्शन से भव्य झूलोत्सव दर्शन का आयोजन किया गया था । जिस में बाल स्वरूप घनश्याम महाराज अपने कर कमलों से लड्डु का प्रसाद देते हुए तथा शिवलिंग पर गंगाजल की धारा (अभिषेक) करते हुए दर्शन अद्भुत हुए थे । इस गाँव में श्रीहरि समकालीन वधाशाका निसर परिवार और उनकी बहन रतनबा का खुशीया परिवार मुंबई बसता है परंतु श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के नियम का पालन करते हैं ।

- बाबुभाई नानजी खुदीया

सुरेन्द्रनगर मंदिर में हिंडोला और कथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से और महंत स्वामी की प्रेरणा से सुरेन्द्रनगर मंदिर में समग्र महीने में विविध प्रकार के सुंदर कलात्मक झूलोत्सव शा. स्वामी प्रेमवल्लभदासजी के मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने श्रद्धा भक्ति से सेवाकरके सभी को अलौकिक दर्शन करवाए थे । श्रावण वद-९ से श्रावण वद अमावस्य पर्यन्त श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण शा. स्वामी प्रेमवल्लभदासजी ने देव आचार्य और मूल संप्रदाय की महिमा के साथ सुरेन्द्रनगर के हरिभक्तों को कथा रस का पान करवाया था । *- शैलेन्द्रसिंह झाला*

विदेश सत्संग वृत्तान्त

कोलोनीया (I.S.S.O., U.S.A.)
श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ कोलोनीया के अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से गुरु पूर्णिमा के निमित्त विशेष सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिस में महंत स्वामी देवप्रसाददासजी ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की तसवीर का पूजन-अर्चन-आरती की थी। जिस में बडी संख्या में हरिभक्तो ने दर्शन का लाभ लिया। उसके बाद प्रासंगिक सभा में शास्त्री स्वामी ईश्वरजीवनदासजी ने धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री ही अपने गुरुहै ऐसा समझाया। स्वयं अपने इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने अपने दिव्यकुल धर्मकुल को स्वयं ही प्रस्थापित किया है। जो साक्षात् श्रीहरि के अपर स्वरूप है। उन्ही के द्वारा गुरुमंत्र-दीक्षामंत्र और मूर्ति प्रतिष्ठा की जाती है। और वही संप्रदाय ही मान्य होता है। शिक्षापत्री में स्पष्ट आदेश किया गया है कि हर गुरुपूर्णिमा को अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन-आरती करना हमारा कर्तव्य है। इस तरह शास्त्री स्वामीने धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री का महिमागान किया। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पत्र भी सभा में पढ़ा गया। श्रावण महीने में विभिन्न झूलोत्सव करके भगवान को झुलाया गया था।

कथा-वार्ता-नित्य नियम और महामंत्र की धुन करके हरिभक्तो ने प्रसाद ग्रहण किया था। अपनी 'सेवा' संस्था में डोक्टरों ने अनेक हरिभक्तों का उपचार करके समाजसेवा का उदाहरण दिया था। उन डोक्टरों का सन्मान संतोने किया था।

प.पू. लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ९ वाँ प्राकट्योत्सव कोलोनिया मंदिर में संत हरिभक्तोने धूमधाम से मनाया। महंत स्वामी देवप्रसाददासजी और शा. ईश्वरजीवनदासजी ने प.पू. लालजी महाराजश्री की तसवीर का पूजन-आरती की। और प्रासंगिक सभा में संतो ने बताया कि घनश्याम महाराज जैसी लीलाएँ बालपन में करतें थे वैसी लीलाएँ अपर स्वरूप प.पू. लालजी महाराजश्री मेंइस छोटी सी उम्र में हम देख रहे हैं। प.पू. लालजी महाराजश्री के अगाढ़ गुणो के महिमा का गान करके सुनाया गया। सभी संत-हरिभक्तोंने आज विशेष सत्संग सभा में कथा-वार्ता और महामंत्र धून की थी। - *प्रवीणभाई शाह*

शिकागो (I.S.S.O.)
श्री स्वामिनारायण मंदिर में गुरुपूर्णिमा का उत्सव मनाया गया

यहाँ अपने शिकागो के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से गुरु पूर्णिमा की प्रासंगिक सभा में महंत स्वामी धर्मवल्लभदासजीने स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित श्री पुरुषोत्तम प्रकाश में से धर्मकुल माहात्म्य महिमा और गुरुपरंपरा - दीक्षामंत्र तथा गुरु मंत्र प.पू. आचार्य महाराजश्री के पास से लिया हो वही संप्रदाय मान्य है। ऐसा कहकर धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री के माहात्म्य शास्त्रोक्त पद्धति से समझाया था। सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की तस्वीरका अर्चन-पूजन सभा में हरिभक्तों ने किया। प.भ. विष्णुभाई (सोलाबाले) बाबुभाई, जगदीशभाई (प्रमुख), प्रविण भगत और महिला मंडलने इस प्रसंग पर सुंदर सेवा प्रदान की। झूलोत्सव दर्शन भी बहुत सुंदर था। - *पूजारी हरिनंदनदास*

शिकागो मंदिर में ८वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया

शिकागो में अपने श्री स्वामिनारायणमंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से और महंत शा. स्वा. धर्मवल्लभदासजी की प्रेरणा से ता. २५-७-०६ से २९-७-०६ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन का पंचाह्न पारायण पूजारी स्वामी हरिनंदनदास के वक्तापद पर संपन्न हुआ। पूर्णाहुति के दिन श्री हरियाग का आयोजन किया गया।

प्रासंगिक सभा में महंत स्वामी धर्मवल्लभदासजी, पू. पी.पी. स्वामी, शा. इश्वरचरणदासजी शा. घनश्यामप्रकाशदास आदि संतो की अमृतवाणी का लाभ मिला। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रदान किए। ता. ३०-७-०६ को प्रातः ८-०० बजे पुजारी संतो द्वारा ठाकुरजी का महाभिषेक वेदविधिपूर्वक किया गया। पाटोत्सव अभिषेक-शिंगार आरती और अन्नकूट आरती के दर्शन करके हरिभक्त गण धन्य हो गए। पारायण के यजमान श्री विठ्ठलभाई और श्री कमलाबहन उनकी मातुश्री पशीबहन के स्मरण हेतु सुंदर लाभ लिया। संजयभाई, पुनीताबहन, प्रविण भगत, तेजशभाई, कमलेश शाह आदि सभीने यजमान पद का दिव्य लाभ प्राप्त किया।

समग्र प्रसंग में जगदीशभाई (प्रमुख) घनश्याम भगत, धीरुभाई, विष्णुभाई, घनश्यामभाई कवि और महिला मंडल की सेवा महत्वकी थी। - *वसंतभाई त्रिवेदी*

वोशिंग्टन डुवी मेरीलेन्ड (I.S.S.O. चप्टर)

ता. ६-८-०६ के रविवार की शाम को २-०० बजे सत्संग सभा में सभी हरिभक्तोंने समूह में कथा-वार्ता-वचनामृत वाचन, कीर्तन-भक्ति, नित्य नियम और आरती-भोग आदि कार्यक्रम किए। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति सुंदर चल रही है। हरिभक्तो की भी अच्छी संख्या है।

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

मारुसणा : प.भ. कांतिभाई शंकरदास पटेल (कोठारी) ता. २८-७-०६ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

अहमदाबाद : (कुकरवाडा - मीरापुरवाले) : प.भ. मगनलाल रामदास पटेल की चि. पुत्री चंद्रिका बहन ता. २०-७-०६ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुइ अक्षरनिवासिनी हुई।

दहेगाम : श्री स्वामिनारायण मंदिर के कोठारी प.भ. अरविंदभाई अमीन के पिताश्री प.भ. हीराभाई दयाभाई अमीन श्रीजी महाराजका स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

वडु : श्री स्वामिनारायण मंदिर के कोठारी प.भ. जयंतीभाई पटेल के छोटेभाई प.भ. वाडीभाई मथुरादास पटेल ता. २९-७-०६ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

अहमदाबाद-नारायणपुरा : प.भ. विजयभाई मनुभाई जोशी (महेमदावाद वाले) की मातुश्री स्व. मधुबहन मनुभाई जोशी दिनांक २३-७-०६ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुइ अक्षरनिवासिनी हुई।

नवा वाडज : प.भ. गोविंदभाई भगवानभाई कथिरिया (गाँव सातवडा) की मातुश्री दिवालीबा ता. १९-८-०६ के दिन श्रीहरिका स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई।

अपने विविध मंदिरो में श्रावण महिने में झूलोत्सव दर्शन की तस्वीर।



अहमदाबाद मंदिर



जेतलपुर मंदिर



गांधीनगर से.-२३ मंदिर



विहार मंदिर (बहनोका) में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर अन्नकूट आरती उतारते हुए प.पू. महाराजश्री।





विहार में शोभायात्रा में दर्शन देते हुए प.पू. महाराजश्री।



विहार मंदिर (बहनोका) में मूर्तिप्रतिष्ठा के प्रसंग सभा में लाभ ले रहे हरिभक्त गण।



गुजरात में अतिवृष्टि से प्रभावित लोगो के लिए अपने कालुपुर मंदिर द्वारा फूड पेकेट की तैयारी की गई।

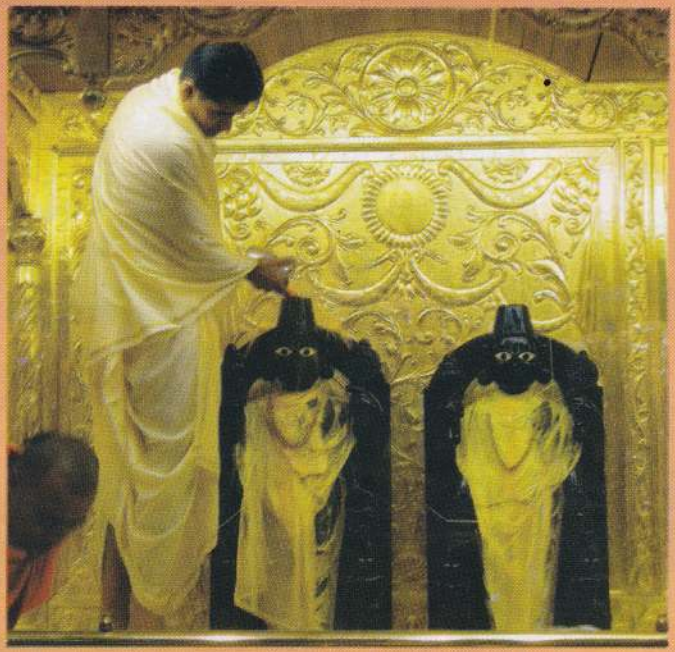


भंचाउ (कच्छ) मंदिर।

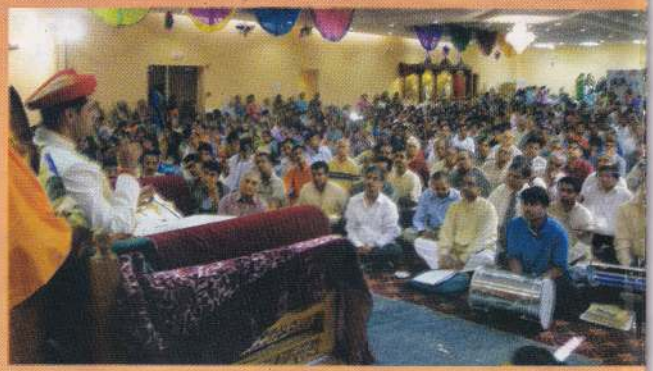




SHREE SWAMINARAYAN
REG. NO. GUJ. 581 Valid up to December 2008
permitted to Post AHME. P.S.O. On 11th of Every Month



कोलोनिया मंदिर में प्रथम पाटोत्सव के प्रसंग पर अभिषेक करते हुए प.पू. महाराजश्री ।



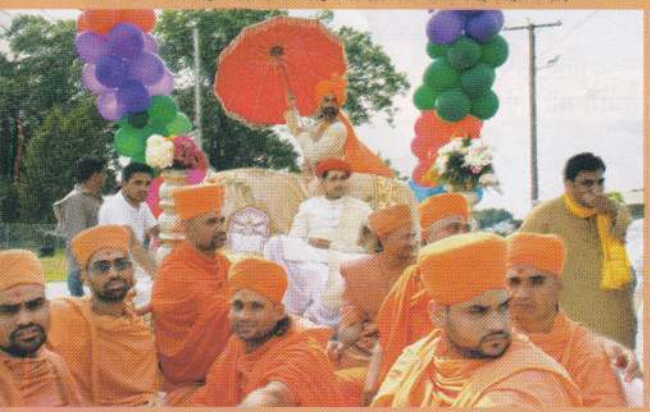
कोलोनिया पाटोत्सव प्रसंग पर सभा में दर्शन देते हुए प.पू. महाराजश्री ।



ह्युस्टन में १५ वी अगस्त पर हजारो भारतीयों के समक्ष ध्वजवंदन करते हुए अपने पू. महाराजश्री



स्टेनमोर मंदिर की सभा में दर्शन देते हुए प.पू. महाराजश्री तथा भुज मंदिर के उप महंत स्वामी धर्मनंदनदासजी



बोस्टन मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर भव्य शोभायात्रा में दर्शन



गेटविक में रंगोत्सव के समय हरिभक्तों के साथ